सुव्यवस्थित शान्तिमय संस्कृति

सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर (पंचांग) :

सामाजिक अस्तित्व की गुणवत्ता एवं बच्चों का भविष्य

12 देशों के 27 लेखकों का बच्चों जवानों एवं आगामी पीढ़ियों को संबोधन

निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगियों सहित *लियो सेमाश्को* ने जो भाषण दिया वह

निम्नवत् है:

अदा अहरोनी, टालगट अक्बशीव, मेरिया क्रिस्टिना एजकोना, रीमोन बाचिका, हेराल्ड बेकर, केर्री बाउडेन, रिनाटो कोरसेट्टी, गाई क्रिकी, मार्ता रॉस डीविट्, नीना गोन्छरोवा, डीमीट्री इवाशिन्ट्सोव, टेकिस लोनीडिस, अब्राम जसफीन, व्लादीमीर केवटोरिन, ईविलीन लिन्डनर, रोस लार्ड, जॉन मैक्कोन्नेल, बेर्नार्ड फिलिप्स, हीलेरी रोसमन, मैत्रेयी बर्धन रॉय, सुबीर बर्धन रॉय, बेर्नार्ड स्कॉट, ईगोर शादखन, रूडोल्फ सीबर्ट, टेटीयोना सेलुटीना एवं क्लाड वीजीयाउ

तेरह (13) भाषाएँ इस प्रकार हैं :

अंग्रेजी, ईस्पेरेन्टो, रुसी, स्पेनीश, फ्रेंच, ग्रीक, जर्मनी, पुर्तगाली, जापानी, चीनी, अरबी, हिब्रू एवं हिन्दी

विषय-सूची

1. प्राक्कथन : वैश्विक मनुष्यता के उपाय के रूप में समन्वय (हार्मोनी) तथा सुव्यवस्थित युग
2. सामाजिक समन्वय (सामंजस्य) निर्धारित (परिभाषित) करना
3. सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर
4. अनेकत्व : सहलेखकों का संक्षेप में विवरण / सार
5. प्रथम उत्तर जवाब

विश्व समन्वय (मैत्री) दिवस : 21 जून

*यह तिथि अयनांत दिवस की है।

"विश्व समन्वय दिवस" (Global Harmony Day) समन्वयात्मक युगीन कैलण्डर (Harmonious Era Calendar) में एक मूल तिथि का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य जाति एकीकरण उसके सुव्यवस्थित शान्ति व क्रम की ओर बढ़ने वाली गति में इस समय इस युग में प्रवेश करता है। एक नया कैलण्डर एवं एक नवीन मानव मापदण्ड अपेक्षित हैं।

समन्वय हमारी विश्व प्रकृति को अभिव्यक्त करता है तथा यह एक सूचना समाज में हमारी मानवता का एक सार्वत्रिक (ग्लोबल) मापदण्ड है।

- -

डॉक्टर लियो सेमाश्को

परियोजना विचार के लेखक एवं सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर के सम्पादक हैं।

- -

लेखकों के देश व पते निम्नवत् हैं:

1. आस्ट्रेलिया – 2 सह लेखक – हिलेरी रोसमन, केर्री बाउडेन
2. अर्जेन्टीना – 1 सह लेखक – मेरीया क्रिस्टीना एजकोना
3. केनडा – 1 सह–लेखक – क्लाड वीजीयाउ
4. इग्लैण्ड – 1 सह लेखक – बेर्नाई स्कॉट
5. फ्राँन्स – 1 सह लेखक – गई क्रीकी
6. ग्रीस – 1 सह लेखक – टेकीस लोनीडिस
7. भारत – 2 सह लेखक – मैत्रेयी बर्धन रॉय, सुबीर बर्धन रॉय
8. इज्राइल – 1 सह लेखक – अदा आहरोनी
9. इटली – 1 सह लेखक – रिनाटो कोरसेट्टी
10. जापान – 1 सह लेखक – रीमोन बाचिका,
11. रूस – 8 सह लेखक – डीमीट्री इवाशिन्ट्सोव, व्लादीमीर केवटोरिन, लियो–सेमाश्को, टेटीयोना सेलुटीना, अब्राम जसफीन, नीना गोन्छरोवा, टालगट अक्बशीव, ईगोर शादखन
12. यू.एस.ए – 6 सह लेखक – हेराल्ड डव्ल्यु बेकर, मार्था रॉस डीविट्, रोस लार्ड, जॉन मैक्कोन्नेल, बेर्नार्ड फिलिप्स, रूडोल्फ सीबर्ट

विश्व नागरिक – ईविलीन लिन्डनर

भाषाओं में अनुवादकों एवं सम्पादकों के पते :

1. अंग्रेजी – मार्था रॉस डीविट्, विल हूनार्ड, क्लाड वीजीयाउ रोस लार्ड, लियो सेमाश्को,
2. ईस्पेरेन्टो – रिनाटो कोरसेट्टी, वयाटचेस्लेव इवानोव
3. रूसी – लियो सेमाश्को, नीना गोन्छरोवा
4. स्पेनीश – मेरिया क्रिस्टिना एजकोना

5. फ्रेंच – क्लाड विजीयाउ, गाई क्रिकी,

6. ग्रीक – टेकिस लोनीडिस

7. जर्मन – वेजीड रागिमोव, ओल्गा बईकोवा, थॉमस स्वीडरेक

8. पोर्चुगीस – एडोल्फ अलकुला, सेरगी कुहतीन

9. जपनीस – जूलिया बोग्डनोवा, इरिना डिड्यूष्किन, रीमन बाचीका

10. चीनी – अन्ना चजु, सिरिल कोटकोव

11. अरेबि – विक्टोरिया शमानोवा, युजिनी फुर्सोवा

12. हिब्रू – इलिया मीनस्कै, एकाटीरिना शुहमान

सेंट - पीटर्सबर्ग

स्टेट पॉलीटेक्नीक यूनिवरसिटी पब्लिशिंग हाऊस

2006

रूस 2006 में प्रथमत: प्रकाशन - सेंट-पीटर्सबर्ग स्टेट पॉलीटेक्निक यूनिवरसिटी पब्लिशिंग हाऊस, 2006, 384 पृष्ठ

29, पॉलीटेक्निचेस्कया स्ट्रीट सेंट पीटर्सबर्ग 195251, रूस
(29, Polytechnicheskaya st., St.-Petersburg, 195251, Russia)
स्वामित्व एवं लेखकीय अधिकार कानून द्वारा सुरक्षित।

ISBN5-7422-1203-8

क्या आप कोई सुझाव देना चाहते हैं ? यदि चाहते तो कृपया सम्पर्क करें:
फोन (Ph) द्वारा : 7-812-5133863,
या ई-मेल : semashko4444@mail.admiral.ru

सार

यह भाषण बच्चों, युवाजनों एवं विश्व के आगामी पीढ़ियों के लिए एक प्रतिबद्धता एवं अपील है। क्यों कि हम एक नए युग में प्रवेश करते हैं, यह समन्वयात्मक युग कैलण्डर परियोजना के, आगामी समन्वयात्मक आदेश का , एक सकारात्मक विकल्प के रूप में अनुएंसा करते हुए विवरण प्रस्तुत करता है। इसका मूल आधार भूमण्डलीय सूचना समाज में एक सार्वत्रिक मनुष्यता की मापदण्ड के रूप में है। समन्वयात्मक युग कैलण्डर विश्व की अनेक संस्कृतियों के बीच उत्पन्न हुआ है। ये सभी संस्कृतियाँ परस्पर जुड़ी हुई हैं तथा मूल्यों के मूलकेन्द्र को बाँट लेती हैं जिनका मुख्य विषय सुस्वरता (सुव्यवस्था) है। बारह राष्ट्रों की संस्कृति व कला के क्षेत्रों के सत्ताईस (27) वैज्ञानिकों एवं क्रियाशील व्यक्तियों ने मिलकर यह कैलण्डर (पंचांग)

बनाया है जिस में सत्ताईस (27) स्मारक एवं अवकाश (छुट्टी) दिवस सम्मिलित हैं। संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के बीच इसे शान्ति, समझ एवं संवाद बनाने हेतु इसे अनेक भाषाओं में प्रकाशित किया गया है। यह बच्चों व युवावर्ग को युद्व एवं शत्रुता के बदले एकता व शान्ति का पाठ पढ़ाता है।

इस भाषण के पाँच भाग हैं, प्राक्कथन, समन्वय (मैत्री) की परिभाषाएँ, समन्वय कैलण्डर, एवं उसके सह लेखकों का संक्षेप में विवरण/सार एवं प्रथम प्रतिक्रियाएँ इत्यादि। भाषण की मूलभाषाएँ चार हैं: अंग्रेजी, रूसी, स्पेनीश, एवं फ्रेंच। इन भाषाओं में इस भाषण के सभी चार भाग प्रकाशित किये गये हैं। अन्य आठ भाषाएँ यानी ईस्पेरेन्टो, ग्रीक, पोर्चुगीस (पुर्तगली) जर्मन, जापनीस, चीनी, अरबी एवं हिब्रू भाषाओं का भी प्रयोग हुआ है परन्तु केवल पहले तीन भागों के लिए है। भाषण भाषाओं का मूल व अतिरिक्त भाषाओं में विभाजन दो कारणों से हुआ। एक, उसकी लंबाई को घटाने की आवश्यकता है तो दूसरा संसाधनों की परिसीमा द्वारा भी है। इन्हीं कारणों से, 20 विवरणों में से केवल पाँच का ही अतिरिक्त भाषाओं में प्रकाशन हुआ एवं लेखकों का सम्पूर्ण डेटा तो केवल अंग्रेजी एवं रूसी में प्रकाशित हुआ।

1. प्राक्कथन : सार्वत्रिक (विश्व) मानवता उपाय के रूप में समन्वय (मैत्री) तथा समन्वयकारी युग के लिए मूल रूपता की समन्वयता

हममें से सभी यह मानते व समझते हैं कि प्राचीन औद्योगिक विश्व ने हमें युद्व एवं असमन्वय (डिसहार्मोनी) दिया हैं। अब अपनी पर पडकर आखिरी साँस ले रहा है। एक नवीन सामाजिक विश्व उत्पन्न होता जा रहा है। वैश्विक (सार्वत्रिक) उचित रूप से वितरित सूचना – हमारे सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन के आधुनिक गुणवत्ता निर्माण के क्रोड के पास रहेगी। एक भूमण्डलीय सूचना संघ प्रारंभ होगा एवं मानव व मानवता का मूल, विश्व प्रकृति की वृद्धि करेगा। विश्व-सूचना विश्व मनुष्यों को अपील करती है जो अधिक वैश्विक सूचना एवं विश्व समन्वयात्मक सामाजिक आदेश के लिए मूल अभिमुख होता है एकदूसरे को संबलित (सुदृढ़) करता है। एक सार्वत्रिक (वैश्विक) सामाजिक आदेश सामाजिक समन्वय के प्रति ज्ञापित करता है जो सभी संस्कृतियों में अतिप्राचीन समय से मानव जाति के लिए अप्रकटित मार्गदर्शक शक्ति के रूप में है। परन्तु केवल इसी समय वह ज्ञात एवं सुसंगत होता है।

प्राचीनकाल के प्रोटागोरस नामक एक दार्शनिक ने 2500 वर्षों के अधिक समय के पूर्व ही "**मानवता**" का सार व्यक्त किया था। मानव (ह्यूमन) समस्त वस्तुओं की माप (मेश्ज़र) है कि वे कैसे बना रहता हैं और कैसे नहीं। उनकी यह परिभाषा सम्पूर्ण समाज की अपेक्षा निजी नागरिकों के निजी विश्व (विचारों) पर बल देते हुए पूर्ववर्ती मानवता के असद्भावनापूर्ण (असुवव्यस्थित) युग से संबंधित थी। निजी नागरिकों के विश्व की प्राथमिकता ने एक-विमीय (हरबर्ट मार्क्यूस) तथा असुवव्यस्थित मानव तथा एक विमीय (हरबर्ट मार्क्यूस) तथा असुव्यवस्थित समाज तथा विलोमत: है। विषयों ने मनुष्य वैयवितक एवं समाज के भीतर असुव्यवस्था (डिसहार्मोनीयस) उत्पन्न की है। इस प्रकार के दृष्टिकोण ने हॉबीस को "**सभी के विरुद्ध सभी के युद्व** " के रूप में समाज को लोगों के उनकी जायदाद, धन- सम्पत्तियाँ, व्यवसाय, आ, लिंग इत्यादि में मतभेदानुसार लोगों की धर्मों की, संस्कृतियों की, समताओं एवं विविध सामाजिक वर्गों की सतत शत्रुता में फँसते हुए देखने को विवश किया। अत: केवल मनुष्यों ने ही निजी विषयों के मूल्य या उनकी माप को निर्धारित किया बल्कि निजी मामलों ने भी (विषयों) मनुष्य अपना महत्व निर्धारित किया (माप बन गये)।

हमारी शताब्दी "वशानुसार" (परवर्ती) जो निजी विषयों से सार्वत्रिक सूचना, निजी एक विमीय मनुष्य एवं असुव्यस्थित समाज से सर्वव्यापक [उसका मूर्त रूप इन्टरनेट, प्रत्येक के लिए प्रवेश्य (सुगम)] बहु आयामीय मनुष्य एवं सुव्यवस्थित समाज में तथा असुव्यवस्थित युग से मैत्रीपूर्ण (सुव्यवस्थित) युग में परवर्तित हो रहा है। एक भूमण्डलीय (ग्लोबल) सुव्यवस्थित समाज निर्मित करने के लिए सार्वत्रिक सूचना पर, अपनी बढ़ने वाली विश्वसनीयता के साथ यह सामाजिक आदेश को बदल देता है। इस में **समन्वय एक वैश्विक, वह आयामीय मनुष्य तथा सभ्य समाज के लिए भी एक माप (उपाय) (तथा वरीयता) बनता है। सामंजस्य सार्वत्रिक, बहु आयामीय (विमितीय) सूचना युग मनुष्य की माप है।** यह प्रत्येक वस्तु की ऐसी माप है जिसे वह बनाता /बनाती है या वह नहीं बनाता/नहीं बनाती है। यदि निजी मामले असामन्जस्य उत्पन्न करते या चाहते हैं तो विश्व सूचना (सार्वत्रिक सूचना) सामाजिक सामंजस्य विश्व समन्वयात्मक (सामंजस्यपूर्ण) मनुष्य को तथा विलोमत: (वाईस वर्सा) उत्पन्न करते तथा चाहते हैं। (सार्वत्रिक) वैश्विक सूचना मनुष्य के लिए तथा भूमण्डलीय (ग्लोबल), सुव्यवस्थित समाज के लिए भी प्रमुख संसाधन एवं पूर्वशर्त हैं। सर्वत्र उपलब्ध सूचना की सहायता से मनुष्य एक भूमण्डलीय (सार्वत्रिक) समाज के भीतर जीना सीखना प्रारंभ करेंगे। इस विशाल सार्वत्रिक शिक्षा की परिवर्तनशील दशा में बच्चों एवं युवजनों को प्राथमिक स्थान रहता है। इस नवीन, समन्वयात्मक युग व संस्कृति की आधार शिलाएँ बननेवाले, हैं बच्चे एवं नौजवान। नई सामाजिक अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हुए। हमारा समन्वयात्मक युग कैलण्डर, समन्वय के सार्वत्रिक मूल्य द्वारा परिवर्तित मनुष्यता मनाने के लिए सत्ताईस संस्मारक तिथियों को एक साथ लाता है।

इस परियोजना समन्वयात्मक युग कैलण्डर नयी पीढ़ियों केलिए वरिष्ठ पीढ़ी के सांस्कृतिक विधान के रूप में, विश्व के बारह (12) देशों से सत्ताईस (27) वैज्ञानिकों एवं संस्कृति के क्रियाशील व्यक्तियों के सामूहिक प्रयासों द्वारा तैयार की गयी है। हमारी परियोजना आगामी पीढ़ियों के लिए आशा के साथ अभीष्ट है कि इन आश्वासनों से वे परिचित हो जाएँ तथा उनके दैनिक जीवन में ये विकसित हो जाएँ। समन्वयात्मक सूचना समाज के लिए बच्चे एवं युग आधार बनेंगे। उन्हें इस लंबे, कठिन परन्तु रचनात्मक व अनुकूल वैश्विक प्रक्रिया से गुजरना होगा जो सभ्यताओं की फौजी विरोध के बढ़ने वाले ध्वंसात्मक धमकियों का विकल्प **नाभिकीय** प्रचुरोद्भव, आतंक, धनी-निर्धनों के बीच की दूरी, परिस्थितीय प्रदूषण एवं अन्य प्रमाण तथा मनुष्यता के स्वयं विनाश के खतरों का विकल्प है। हम आशा करते हैं कि हमारी संयुक्त परियोजना युवजन एवं आगामी पीढ़ियों से इस रचनात्मक प्रक्रिया के लिए सानुकूल सहयोग (आंशदान) आकर्षित करेगा। संक्षेप में, मैं अपने कैलण्डर व संबोधन के समस्त सह-लेखकों का हार्दिक आभार मानता हूँ। यदि उनके कठिन परिश्रम नही हो तो ये कार्य नहीं बन पाते। मैं "**विश्व प्रेम दिवस**" (ग्लोबल लव डे) के हेराल्ड बेकर के प्रति मैं अपना विशेष आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिनके कारण समन्वय कैलण्डर बनाने का विचार मेरे मन में आया है। अदा अहरोनी ने एक नवीन शान्तिमय संस्कृति के विचार को मेरे समक्ष रखा है। उसी प्रकार, धर्म के स्वर्णिम नियम संबंधी महत्व विचार के लिए रूडोल्फ सीबर्ट को, सार्वत्रिक मूल्यों व चिन्हों के विचारों के लिए रीमोन बाचिका को, 91 वर्ष की आयु वाले जॉन मैक्कोन्नेल को जो धरती दिवस के संस्थापक हैं, मूल मानवतावादी एवं परिस्थितीय तिथियों के संबंध में जानकारी देनेवाले धरती न्यास एवं "**आशा का नक्षत्र**" (अर्थ ट्रस्टीस (Earth Trustees) एवं स्टार ऑफ होप) के नीना गोन्छरोवा, क्लाड वीजीयाउ तथा टालगट अक्बशीव को एवं बच्चों के लिए तिथियाँ समर्पित करनेवाले टेटीयोना सेलुटीना, केर्री बाउडेन, मैत्रेयी बर्धन रॉय एवं सुबीर बर्धन रॉय को मैं विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ। समन्वयात्मक समाज में प्रत्येक दिन एक रत्न के समान है जो स्मृति पटल पर अंकित हो जाता है तथा उसके लेखन द्वारा प्रस्तावित दिन की उपयुक्तता का स्पष्ट उल्लेख करता है। मैं अपनी सच्ची कृतज्ञता मेरिया क्रिस्टिना एजकोना, क्लाड वेजीयाउ, टेकिस लोनीडिस, रिनाटो कोरसेट्टी, को क्रमश: उनके स्पेनिश, फ्रेंच, ग्रीक, ईस्पेरेन्टो अनुवादों के लिए तथा सभी अन्यों के लिए भी प्रकट करना चाहूँगा। साथ-साथ संपादक क्लाड विजीयाउ, विल हून्नार्ड, मार्था रॉस डीविट्, रोस लार्ड तथा अन्यों को, हीलेरी रोसमन, नीना गोन्छरोवा व क्लाड विजीयाउ जैसे चित्रकारों (आर्टिस्ट) के प्रति भी अपना

आभार प्रकट करना चाहूँगा। मेरी धर्मपत्नी लूसी के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिसके प्रेम, सहनशीलता एवं सहारा के कारण ही मैं यह परियोजना प्रारंभ करके सफलतापूर्वक समाप्त कर सका और यह हमारे प्रेम प्रतीक बन गया।

लियो-सेमाश्को : सेंट पीटर्सबर्ग के स्टेट का कौन्सिलर, पी एच.डी. सामाजिक दार्शनिक एवं समाज शास्त्री निदेशक : टेट्रासोशियोलॉजिकल संस्थान (Tetrasociological Institute), आई. एफ.एल.ए.सी. (IFLAC), रूस एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेबसाइट "सामजिक समन्वय एवं बच्चों की प्राथमिकता से शान्ति की एक नवीन संस्कृति"। www.peacefromharmony.org

मई 31, 2006, सेंट-पीटर्सबर्ग-रुस

2. सामाजिक समन्वय की परिभाषा

सामाजिक समन्वय की परिभाषाएँ मूल से नवीन सामाजिक दार्शनिक प्रवेश (अप्रोच) मानते हुए, साथ सार्वत्रिक (यूनीवर्सल) सामाजिक समन्वय के उपाय के रुप में सार्वत्रिक सूचना रखते हुए, सार्वत्रिक मानव के सार्वत्रिक उपाय के रूप में तथा मानवता के सार्वत्रिक उपाय के रूप में समन्वय को पहचानती हैं। समन्वय दो प्रकार के होते है:

(अ) बाहरी या कार्यात्मक समाज में अपनी भूमिका एवं अर्थ पर लागू होते हैं तथा

(आ) आन्तरिक या संगठनात्मक जो सामाजिक (तत्वों) नटों (एक्टर्स) (सामाजिक समूह व वर्ग) संरचना एवं संगठन क्रम इत्यादि की आवृत (सम्मिलित) करता है।

तदनुसार, समन्वय की परिभाषा दो प्रकार की होती है। समन्वय को परिभाषा दो प्रकार के हैं। वे कार्यात्मक एवं संरचनात्मक परिभाषा हैं।

समन्वय की कार्यात्मक (फंक्शनल) परिभाषाओं का संक्षिप्त वितरण:

सामाजिक समन्वय (सामंजस्य) :

विविधता में, समन्वित किया हुआ संवादात्मक एवं संतुलित एकता के लिए "**खोज**" सम्मिलित (आवृत) रहता है। यह एक ऐसी एकता है कि विविधता में सामाजिक समन्वय एवं उसकी संगठनात्मक क्रम विविधता में समन्वयात्मक एकता का ऐसा क्रम है कि वह समन्वयात्मक (सामन्जस्यपूर्ण) शांति या समन्वयात्मक क्रम (दशा) का समरुप होता है।

– विविधता में एक **सुव्यवस्थित** (सुसंगत) **क्रम** को आवृत (सम्मिलित) करता है जिसमें आन्तरिक संघर्ष वर्जित नहीं करता लेकिन विविधता में शान्तिमय एकता उपलब्धि को नाश करनेवाले उसके हिंसापूर्ण संकल्प को नाश करता है।

– "क्या शान्ति चाहते हो"? युद्ध के लिए तैयार हो जाओ" के बदले, क्या शान्ति चाहते हो"? "समन्वय स्थापित करो" वाले सिद्धांत कथन का **विवरण।**

– "संस्कृति का **विकल्प** युद्व है"। जो मानवजाति का आत्मविनाश करता है। विविध संस्कृतियों, धर्मों, व्यक्तियों तथा सभ्यताओं का रूप शान्ति हैं। उनके युध्दों, मुकाबलों तथा संघर्षों को रोकता है परन्तु समन्वय व एकता में उनकी विशिष्टताओं व उपलब्धियों को सुरक्षित रखलेता है।

– प्राचीनकाल से आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों का **री–ओरीएन्टेशन** (पुनर्भिमुखीकरण) है। समन्वयात्मक फौजी आदेश (क्रम) को, एवं युवा समन्वयात्मक, शान्तिमय क्रम को एक नवीन प्राथमिकता दी गई है।

– सार्वत्रिक (भूमण्डलीय) **विश्वास** एवं आगामी पीढ़ियों के लिए यह आशाजनक है।

– सुव्यवस्थित, प्राकृतिक आर्डर (क्रम) की खोज को, यथास्थिति (स्टेटस को) के लिए क्षमा याचना करने वाले सामाजिक विज्ञानों से **विमुख होना** तथा सामाजिक समन्वय सुनिश्चित करने केलिए साथ मिलकर काम करनेवाले उसकी अपनी सहज एक्टर्स (वर्ग, समूह इत्यादि) का विच्छेद (एक्सप्लोरेशन)।

– बढ़ती मानवता की वैश्विक समस्याओं का **संकल्प,** युद्व की तैयारी के बदले वैश्विक समस्याओं का निर्णय करने केलिए विश्व के संसाधनों का निर्देश करनेवाली शान्तिपूर्ण सभ्यता संघों द्वारा परिस्थितीय, ऊर्जा, आहार, पोषण जनसंख्यकीय इत्यादि।

– सामाजिक अस्तित्व की एक **नई गुण,** को सम्मिलित करता है जो सामाजिक जीवन के गुणवत्तापूर्ण नये क्रम (आदेश) की तरह गुणवत्तापूर्ण नये विषय का सृजन करता है।

– **एक संतुलित** एवं क्रम विश्व की समन्वित बहु–ध्रुवता को विश्व (ग्लोबल) गाँव।

– **संभालनेवाला,** सामाजिक रूप के आधार पर घटित होने वाले विविध मानवजातीय सक्रिय संतुलन, समन्वयात्मक व शान्तिमय सामाजिक वर्ग व समूह।

– समर्थन, वार्तालाप व स्वीकृति सिद्धांतों में **भागीदारी** के आधार पर बच्चों, युवजन एवं वयस्कों द्वारा लाया जानेवाला समन्वयात्मक क्रम की कल्पना की सहकारी अभिकल्प इत्यादि आवृत (सम्मिलित) हैं।

समन्वयात्मक युग (हारमोनिएस इरा) के लिए कैलण्डर का क्रम:

– सूचना समाज के आधुनिक युग के दौरान मानव जाति के समन्वयात्मक सामाजिक क्रम (आदेश) के प्रधान प्रतीक से **एक है**।

– विगत दो सहस्र शताब्दी (मिल्लीनिया)के सामाजिक असमन्वय का **अस्वीकरण** सतत जातिगत युद्व ों, धार्मिक शत्रुता व सभ्यताओं द्वारा चरित्र चित्रित किया गया है।

– नवीन युग में सेना दण्ड (फौजी) एवं सैनिक संस्मारकों का एक **विकल्प**।

– पूर्व व पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के बीच समन्वयात्मक सार्वत्रिक (ग्लोबल) संबंध व आर्डर (क्रम) स्थापित करने के लिए सामाजिक समन्वय स्थापित करने की एक **सांस्कृतिक पद्धति** (मार्ग) है।

– सांस्कृतिक दृष्टि विघटित मानवजाति को एकत्र (एक) करने वाले सामान्य मूल्य एवं महत्वपूर्ण तिथियों से युक्त विश्वकोश **(थेसारस)** है।

– इसके पूर्व बने कैलण्डरों में से शान्तिमय तिथियों का **संरक्षण**।

– समन्वयात्मक शान्ति की नवीन संस्कृति का **प्रतीक** है कि समन्वय के युग में प्रवेश करना है, एवं

– एक समन्वयात्मक क्रम में जीने को सक्षम मानवजाति को स्पष्ट देखते हुए युद्ध एवं शत्रुता के लिए कोई समय न छोड़ते, वर्ष में प्रत्येक दिन शान्तिपूर्व **परिवर्तन** करना।

समन्वयात्मक (हार्मोनियस) युग कैलण्डर की अन्य तिथियों (तारीखों) को एक करनेवाली केन्द्रीय तिथि (सेन्ट्रल डेट)

सार्वत्रिक (विश्व) समन्वय (हार्मोनी) दिवस : 21 जून

सामाजिक समन्वय की कार्यकारी परिभाषाएँ, सामाजिक समन्वयात्मक क्रम (आर्डर) एवं उसके नट (एक्टर्स) समूह, वर्ग इत्यादि) की संरचना एवं आंतरिक निर्माण का परिचय कराने वाले उसकी सुगम संरचनात्मक परिभाषा समाज में अपनी भूमिका एवं अर्थ प्रकट करती हैं।

इन संरचनात्मक परिभाषाओं को सामाजिक दार्शनिक सिद्धांतों एवं कार्रवाई का एक विशेष जोडी (सेट) अपेक्षित है। फिर भी, इन सिद्धांतों व प्रवेशों (अभिगम एप्रोचेस) का अनेकत्व, समन्वय की संरचनात्मक परिभाषाओं को लंबी बहस (चर्चा–परिचर्चाओं) का विषय बनाता है जिसके प्रारंभिक स्वरूप का सार हम ने अपने भाषण के अन्तिम दो भागों में संक्षिप्त किया है।

3. समन्वयात्मक युग कैलण्डर

आगामी पीढ़ियों को सार्वत्रिक (विश्व) (ग्लोबल) सूचना समाज के समन्वय युग में प्रवेश

एक वचनबध्दतायुक्त संबोधन व अपील

प्रस्तावना :

विश्व की मूल सभ्यताओं व धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले बारह (12) राष्ट्रों के सत्ताईस (27) सह–लेखक, वैज्ञानिक, कलाकार एक संस्कृतिक क्रियाशील व्यक्ति हमारी धरती के बच्चों के भाग्य की चिंता करते हुए, बच्चों और उनके बच्चों के प्रति प्रेम रखते हुए शांति की नवीन संस्कृति के प्रधान मूल्य के रूप में समन्वय के विचार से संगठित हुए हैं:

● समन्वयात्मक शान्तिमय संस्कृति का कैलण्डर के रुप में नये समन्वयात्मक युग कैलण्डर का प्रस्ताव जो समन्वयात्मक सूचना संघ के जन्म के साथ सृजित किया गया है। (बनाया गया है) हमारी कैलण्डर परियोजना समन्वय, (सामंजस्य) प्रेम, शान्ति एवं अन्य वैश्विक (सार्वत्रिक) मूल्य की 27 तिथियों को प्रस्तावित करती है जो समस्त संस्कृति धर्म, मानवजाति एवं सभ्यताओं के लिए स्वीकार्य है।

● इस कैलण्डर के व्यावहारिक प्रयोग एवं विकास हेतु और अधिक कार्य करके आगामी पीढ़ियों के हित के लिए वचनबद्ध हैं। यह कैलण्डर एक नया दर्शन, विश्वदृष्टि या सिद्धांत अपेक्षित करता है। परन्तु, सामाजिक समन्वय के सामान्य संरचना को समझ एवं उसे उपलब्ध करने का साधन हमारे पास नहीं है। हम में से प्राय: सभी विविध सैद्धांतिक दृष्टियों से जुड़े रहते हैं जिनका नीचे संक्षेप में विवरण या सार दिया गया है हमे यह मालूम है कि हम दोनों के बीच युवा पीढ़ियों के साथ, बिना वार्तालाप के एवं बिना आपकी आध्यात्मिक भागीदारी के, शान्तिमय संस्कृति का नया कैलण्डर एवं उसका दार्शनिक/सैद्धांतिक प्रमाणीकरण संभव नहीं है। आप के दैनिक जीवन में शान्ति को प्रभावित करनेवाले इन संस्कृतिक तत्वों व निर्णयों के लिए अपना सोच-चिार, पसंद, न्यसंद को आवश्यकता है।

● हम अपील करते हैं कि आप अपने विचार, प्रस्ताव एवं व्यावहारिक क्रियाओं से, उन्हें सक्रियता से प्रोन्मत करें, विकसित करें व आधुनिक बनाएँ। आप उन्हें हमारी साईट http://www.peacefromharmony.org/cat=en_c&key=132 के संवादात्मक पृष्ठ पर शान्ति एवं समन्वय व बाल (बच्चों की) प्राथमिकता पर व्यक्त कर सकते हैं। हमारी वचनबद्धता अपील में साथ देने के लिए विश्व के सभी राष्ट्रों के अन्य वैज्ञानिकों, कलाकारों एवं सांस्कृतिक क्रियाशील व्यक्तियों को आमंत्रित करते हैं जो ग्लोबल सूचना विश्व एवं व्यक्ति के रोजमर्रे दैनिक जीवन में, मुकाबला एवं संघर्ष की परम्परा से समन्वय की परम्परा तक एक सैद्धांतिक पारी (शिफ्ट) बन सकती है।

समन्वय कैलण्डर

प्रत्येक सभ्यता का हरेक समाज, अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाओं को आयोजित करने के लिए कुछ विशिष्ट कैलण्डर दिन अंकित करता है। कैलण्डर सांस्कृतिक मूल्यों का रोज स्मरण दिलाते हैं तथा मनुष्यों के रोजमर्रे व्यवहार को परिभाषित करने के लिए सहायता करते हैं। जिसका मूलाधार नवीन शान्तिमय संस्कृति। "यदि तुम शान्ति चाहते हो तो समन्वय की खोज करो"। यह मूलाधार विगत अतीत व समकालीन सभ्यताओं के दौरान मौजूद युद्व संस्कृति के अनेक कैलण्डरों को बदल देता है जिसमें मूलाधार था "यदि तुम शान्ति चाहते हो तो युद्व के लिए तैयार हो जाओ"। आधुनिक सूचना-युग के लिए अनुकूल नवीन शांतिमय संस्कृति एवं कैलण्डर जो 20 वी सदीं के मध्यकाल में प्रारंभ हुआ। समन्वयात्मक शान्ति की नवीन संस्कृति पुरानी संस्कृति से उत्पन्न हुई जो धीमी एवं श्रम से पश्चिम व पूर्व-दोनों विभिन्न सभ्यताओं से अपनी उपलब्धियों का विश्लेषण-संश्लेषण करके उत्पन्न हुई। समन्वय का विचार व स्वप्न, पश्चिम में, होमर, पैथागरस एवं हमारे समय के लीबनिट्ज तक के महानुभावों द्वारा विकसित हुए तथा पूर्व में तो बौध्दधर्म व कन्फ्यूशियस के विविध विचारधाराओं में। अत: समन्वय मूल्य के लिए एक वैश्विक पृष्ठभूमि है जिस पर सूचना युग के लिए एक आधुनिक समाज को विकसित करना है। प्राचीनकाल में यदि समन्वय (हारमोनी) एक मात्र सपना रह गया तो वर्तमान युग उसे साकार बनाने के लिए वैसा ही अवसर प्रदान करेगा जैसे औद्योगिक समाज ने जन समूह (मास) संचार एवं जन समूह (मास) परिवहन के सपनों को साकार किया। परमाणु-स्व-विनाश के आतंक व प्रबल खतरे के लिए समन्वय ही एकमात्र विकल्प है जिसके कगार पर औद्योगिक समाज ने हमारे विश्व को रखा है। अत: सूचना समाज का अपने उद्देश्य में समन्वयात्मक होना अनिवार्य है वरना वह जीवित नहीं बचेगा।

समन्वयत्मक संस्कृति के गहरे विचारों सहित उसके सैद्धांतिक प्रमाणीकरणों को अन्तर्राष्ट्रीय एवं बहु-संस्कृतीय वेब साईट "सामाजिक समन्वय एवं बाल प्राथमिकता से शान्ति की एक नवीन संस्कृति" को प्रस्तुत किया गया है। (http:// www.peacefromharmony.org) फरवरी 2005 से लेकर इस साईट ने व्यावहारिक रूप से सभी प्रधान विश्व सभ्यताओं एवं धर्मों का व्यावहारिक रूप से प्रतिनिधित्व करनेवाले 27 देशों के 140 से भी अधिक सह-लेखकों को परस्पर मिलाया है। इस सईट ने अपनी प्रारंभिक प्रेरणा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का साहित्य व संस्कृति फोरम (आई एफ एल ए सी (IFLAC)) से प्रेरणा प्राप्त की है जिसे एक विश्व प्रसिद्ध कवि व वैज्ञानिक प्रोफेसर अदा अहरोनी ने स्थापित किया। हमारी साईट (इफलैक - IFLAC) पेव पीस, मिशन जारी रहेगा। लेकिन अपने पृष्ठों पर विविधता में समन्वय के सिद्धांत के अनुसार-समन्वय के विविध व्याख्यानों के लिए उसे प्राप्त करने के मार्ग / साधनों के लिए स्थान प्राप्त किया। संक्षेप में इन विशिष्टताओं को निम्नविधि से व्यक्त किया जाता हैं।

अदा अहरोनी - युद्व से परे एक विश्व का निर्माण करने के लक्ष्य से एवं लिंग समानता के आधार पर, मनुष्यों एवं राष्ट्रों के बीच समझ एवं आदर के सेतुओं के आधार पर नवीन समन्वयात्मक शोध, सिद्धांत एवं व्यवहार को विकसित कर रहे हैं।

मार्था रॉस डीविट् - पुरानी प्रणालियों से नयी प्रणालियों में विकसित होने के कारण प्रभाव की मैत्रीपूर्णता एवं अधिकार बाँट लेने के सिद्धांत से ये आगे बढ रहा है।

रीमोन बाचिका - विश्व के (यूनीवर्सल) मूल्यों एवं प्रतीकों के सिद्धांत में रूचि है जो धार्मिक मैत्रीपूर्णता (हार्मोनईजेशन) उत्पन्न करती है।

हीलेरी रोसमन - हृदय एवं उनके संचारों के समस्वरता (हार्मोनईजेशन) सिद्धांत को विकसित कर रहे हैं।

रोस लार्ड - माताओं की एक प्राणता (सोलीडारिटी) के विचार के लिए वचनबद्ध है तथा सामाजिक समन्वय की आवश्यक पूर्व शर्तो के रूप में भूख की समस्या से निपट रहे हैं।

ईविलीन लिन्डनर - समान मान-मर्यादा (डिग्निटी) सिद्धांत को बढ़ाता देते हैं और एक उदार (डीसेंट) एवं समन्वयात्मक समाज के लिए पूर्वशर्त की तरह अपमान पर विजयी हो रहे हैं।

बेर्नार्ड फिलिप्स - सामाजिक दृश्यों से सम्बंधित हमारे ज्ञान को मिलाकर तथा एक स्थिर धर्म-तंत्रीय विश्वदृष्टि को बदलने के लिए एक संवादात्मक विश्वदृष्टि के सिद्धांत को आगे बढ़ा रहे हैं।

बेर्नार्ड स्कॉट - साइबरनेटिक प्रकृति एवं समन्वय प्रणाली (पद्धति) के सिद्धांत को विकसित कर रहे हैं।

रूडोल्फ सीबर्ट - धमों के स्वर्णिम नियम के आधार पर धर्मों के संघ के सिद्धांत को विकसित करने के लिए वचनबद्ध है जो अपने में स्वभावत: समन्वयात्मक है।

हेराल्ड बेकर – विश्व प्रेम दिवस के विचार के पीछे हैं जो समन्वय के साथ वियोज्य है।

केर्री–बाउडेन – बच्चों को, एक सर्वोत्तम सुव्यस्थित (मैत्रीपूर्ण) दुनिया प्रदान करने के विचार को विकसित कर रहे हैं।

रिनाटो कोरसेट्टी – अंन्तर्राष्ट्रीय भाषा, इस्पेरेन्टो को शान्ति, समन्वय एवं लोगों में भाईचारा बढ़ाने हेतु एक भाषाई साधन बनाने के विचार को आगे बढ़ा रहे हैं।

लियो सेमाश्को – सामाजिक क्षेत्र–वर्गों के प्रभाव को ध्यान में लेते हुए, सामाजिक समन्वय (सद्भावना) के टेट्रा (चार) सामाजिकीय सिद्धांत को विकसित करते हुए, बच्चों एवं युवकों को प्राथमिकता देने के लिए वचनबद्ध हैं। इस तरह दूसरे भी हैं। पाठक सद्भावपूर्ण (सुव्यवस्थित), शान्तिमय संस्कृति से सम्बन्धित इन विचारों व सिद्धांतों को और विस्तार से छानबीन कर सकते हैं तथा (निम्नलिखित) लेखकों के अपने विवरणों सार से बदलनेवाले प्रस्ताव उपगमनों (अप्रोचस) को समझ सकते हैं एवं हमारे साईट के समुचित पृष्ठों पर भी देख सकते हैं जो सद्भाव (समन्वय) व शान्ति बढ़ाने की पद्धतियों पर संवाद करने के लिए अवसर प्रस्तुत करता है जिसके लिए हम सब सहमत हैं।

समन्वय की आकांक्षा रखनेवाले विविध सैद्धांतिक एवं सास्कृतिक तार अर्थात् समन्वित संवादात्मक एवं संतुलित एकता से संबंध रखना चाहते हैं। यह एक विकसित होनेवाली प्रक्रिया है जिसे हमने अपनी वेबसाईट पर प्रारंभ किया है। हम सब को विशेषत: बच्चों एवं युवजनों को आमन्त्रित करते हैं।

हम समन्वय बनाने की अपनी इच्छा द्वारा संगठित हैं और हम बच्चों एवं युवावर्ग से इसमें शामिल होने के लिए बुलाते हैं। इसका विकल्प है, युद्व , नफरत, अपमान, और असहिष्णुता आदि व्यक्ति के जीवन को आतंकित करेगा तथा उस असीम (अकथनीय) खतरे से भर देंगे। समन्वय का मार्ग अवसर का एक मार्ग है एवं उसकी प्रामाणिक प्रकृति दी जाती है जो अपरिहार्य है। इसे हमारी समन्वित विकल्पों एवं व्यवहारों का परिणाम माना जाता है। हम आपको विवादों के परिष्कार के रुप में पारंपरिक फौजी मार्ग की अपेक्षा नया–नया सद्भावपूर्ण सुव्यस्थित मार्ग चुन लेने को आमन्त्रित करते हैं।

मनुष्य जाति के सभी वैश्विक समस्याओं में से शान्ति प्राप्त करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। चूँकि केवल शांति द्वारा ही संघर्ष समाप्त करके विश्व के समाधानों पर ध्यान दिया जा सकता है, यही अन्य विश्व समस्याएँ निर्धनता, स्वास्थ्य, परिस्थिति विज्ञान, जन सांख्यिकी, ऊर्जा, भोजन, सुरक्षा इत्यादि हैं। हल करके सभी मनुष्यों को एक करने को सामर्थ्य बढ़ेगा। बिना समरुचिवाले लोगों के साहचर्य एवं एकाग्रता के, रचनात्मक निर्णय लेना एवं उनको अमल करना असंभव है। वर्तमान में हम इस निश्चय पर पहुँचे कि शान्ति तक ले जाने वाला मार्ग समन्वय (सद्भाव) द्वारा ही होगा यदि सशस्त्र संघर्ष द्वारा **हम युवजनों से समन्वय निर्माण की चुनौती स्वीकार करने एवं सच्ची शांति प्राप्त करने के लिए, युध्द रोकने की अपील करते हैं।**

हमारी साईट के बहु–संस्कृतीय वातावरण एवं बहुतर्कीय संचारों में विविधसूत्रों (तारों) के सद्भावना (समन्वय) का एक नई संस्कृति का कैलण्डर उत्पन्न हुआ है। ऐसे तारों (chords) में निम्नलिखित तिथियाँ रहती हैं, जैसे:

हेराल्ड बेकर द्वारा 2004 में संस्थापित लव फाउन्डेशन (USA)विश्व प्रेम दिवस को मई पहली तारीख को एक वार्षिक अन्तराष्ट्रीय समारोह का प्रस्ताव रखते हैं। (www.thelovefoundation.com)

इफलाक पेव पीस के अध्यक्ष, डॉ. अदा अहरोनी, 1999 में निर्वाण तिथि - जुलाई - 30 को नयी शान्ति संस्कृति के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस कैलण्डर के लिए प्रस्ताव रखते हैं। इस दिन ने "**यदि तुम शान्ति चाहते तो शान्ति के लिए तैयार हो जाओ**" वाले सिद्धांत इस विनिर्मित सुव्यवस्थित (सद्भावनापूर्ण) शान्तिमय संस्कृति के लिए नये मार्गों की खोज व शोध को प्रारम्भ किया। इफलाक की सहायता से, डा. अदा अहरोनी लोगों व राष्ट्रों के बीच समझ व गौख के पुलों के आधार पर साहित्य व कविता एक क्रान्तिपूर्ण शान्तिमय संस्कृति के शोध, सिद्धांत एवं व्यवहार को विकसित कर रहा है तथा युद्धों से परे विश्व को निर्मित करने हेतु सम-लिंग के आधार पर परस्पर मिलकर काम करनेवाली महिलाओं की पूर्णभागिता के साथ कर रहा है।

आस्ट्रेलिया के केर्री बाउडेन, जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञा क्लब (प्रॉमिस क्लब) के संस्थापक है (www.thepromiseclub.com) ने समुचित क्रियाशील व्यक्तियों का कैलण्डर बनाया (http://my.calendars.net/betterworld) एवं नवंबर 30 के दिन विश्व के बच्चों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञा (प्रामिस) दिवस मनाने का प्रस्ताव रखते हैं।

डॉ. मार्था रॉस डीविट् जो अमेरिका के समाजशास्त्री हैं-नये कैलण्डर में नवंबर 11 को अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध विराम दिवस के रूप में जोड़ने का प्रस्ताव रखते हैं और इस के द्वारा आगामी पीढ़ियों को यह याद दिलाना चाहते हैं कि इसी दिन विश्व महायुद्ध - 1 (World War 1) को समाप्त करनेवाली हथियार रख देने की धारणा हुई। वे डॉ. अदा अहरोनी के साथ मिलकर 15 मई को एक समन्वय (मेल-मिलाप) दिवस का भी प्रस्ताव रखती हैं जो फिलिस्तानों (Palestanians) एवं यहूदियों (Jews) के लिए महत्वपूर्ण है तथा जो पास-पास शान्ति में सहानुभूति समक्ष के साथ शरणार्थियों की स्थिति में अपने-अपने स्वदेश स्थापित करने की आशा में जिसके लिए वे बरसों तक दु:खी थे। मध्य पूर्व में अहिंसापूर्ण संघर्ष दूर करने के एक मिसाल प्रस्तुत करने की आशा को व्यक्त करते हैं।

रोस लार्ड (यू.एस.ए.) 12 जनवरी को अन्तर्राष्ट्रीय भूख व गरीबी निर्मूलन दिवस मनाने का प्रस्ताव रखते हैं जिसमें न्याय का मूल्य जोड़ने से उनके बहिष्करण को सुनिश्चित होगा।

हमारी वेब साईट (www.peacefromharmony.org) सह लेखकों ने 2005 वर्ष में, 1 जून को विश्व में "बच्चों को प्राथमिक नामक नया विश्व" आन्दोलन प्रारंभ करने को प्रस्तावित किया है। अब हम 1 जून को न केवल बच्चों की रक्षा करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने को प्रस्तवित करते हैं बल्कि बच्चों को प्राथमिकता भी देने को कहते हैं। 1 जून, हमारे लिए बच्चों की सुरक्षा एवं प्राथमिकता का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस है। विश्व में बच्चों की प्राथकिता संस्थपना उनके लिए सर्वोत्तम सुरक्षा तथा उनके सुव्यवस्थित विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शान्ति के लिए सर्वोत्तम अवसर भी हैं।

हम 21 जून यानी सूर्य के अयनांत का एक अतिविशाल अर्थ में समन्वय को समझते हुए विश्व समन्वय दिवस के रूप में मनाने को प्रस्तावित करते हैं। समाज के भीतर तथा व्यक्ति के भीतर दोनों में यह होगा। केवल इतना ही नहीं, बल्कि मनुष्यों के बीच, व्यक्तियों के बीच तथा मनुष्य व प्रकृति के बीच भी (समन्वय) होगा। अलावा इसके, इसी दिन हम 21 जून को समन्वयात्मक शान्ति विश्व संस्थापन (हार्मोनियस पीस ग्लोबल फाउन्डेशन) हेतु निधि वसूल करने के दिवस के रूप (फण्ड रेइजिंग डे) में भी प्रस्तावित करते हैं। सामाजिक समन्वय (हार्मोनी) को सबसे महत्वपूर्ण परिणाम युद्ध बहिष्करण सहित सुव्यवस्थित शान्ति है। सुव्यवस्थित शान्ति (हार्मोनियस) की संस्थापना एवं युद्ध निवारण इन के लिए उतने ही बहुत संसाधन

अपेक्षित हैं जितने आज तक युद्व एवं हथियारों ने निगल लिये हैं तथा गरीबी उन्मूलन एवं सभी बच्चों को सुव्यवस्थित शिक्षा दिलाने के लिए अपेक्षित हैं। निधियों की वसूली के लिए हमारा सुझाव यह है कि शायद संयुक्त राष्ट्र संघ (यु.एन) से संबद्ध रहकर 21 जून को वसूली का प्रधान दिन मानते हुए एक समुचित फाउन्डेशन स्थापित किया जाए। इन दो दिनों का सम्मेलन (संयोग) प्रथम सद्भावना (समन्वय दिवस) तथा द्वतीय (समन्वय स्थापना दिवस) सर्वोत्तम सांस्कृतिक महत्व दोनों के लिए व्यावहारिक समर्थन (सपोर्ट) देता है। यदि वर्तमान में युद्व व हथियारों पर खर्च किए जाने वाले संसाधन व साधन सुव्यवस्थित शान्ति (फाउन्डेशन) हेतु निर्देशित किए जाए तो 20 से 40 वर्षों के अन्दर उसके लक्ष्य प्राप्त किए जा सकेंगे।

प्रोफेसर रूडोल्फ सीबर्ट (यू.एस.ए) जो विगत 30 वर्षों से "**धर्म का भविष्य। सभ्यताओं के बीच युद्व से शान्ति तक**" के अन्तर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (कोर्स) के निदेशक हैं वे प्रोफेसर रीमोन बाचिका (क्योटो, जापान) एवं डॉ. लियो सेमाश्को के साथ मिलकर समन्वय (मैत्री) कैलण्डर में 1 जनवरी को विश्व धर्मों का स्वर्ण-नियम दिवस मनाने का प्रस्ताव रखते हैं। (कोई दूसरी तारीख पर भी विचार किया जा सकता है।) यह दिन मुकाबला (कॉनप्रेन्टेशन) प्रतिशोध (रेट्रिब्यूशन), हिंसा, अपहरण, डिस-हारमॅनि का प्रतिनिधित्व करनेवाले *लेक्स टेलियोनीस (lex talionis)* के लिए एक प्रतिविष (antidote) के रूप में अभिप्रेत है। इसके बजाय यह दिवस समस्त धर्मों व विश्व वासियों को एक करके (मिलाकर) उन्हें शान्ति, प्रेम एवं समन्वय (सामंजस्य-हारमॅनि) के लिए प्रेरित करता है। समस्त विश्वासियों के लिए यह स्वर्ण-नियम दिवस एक सामान्य दिवस होगा क्योंकि स्वर्ण नियम ने समस्त जीवित विश्वधर्मों में तथा धर्म निरपेक्ष मानवजातीय आंदोलनों में, इस ग्रह (धरती) के समस्त निवासियों के बीच समन्वय की अभिव्यक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त की है। यह तो विश्व प्रकृति (global ethos) का दिवस होगा।

रिनाटो कोरसेट्टी, अध्यक्ष यूनीवर्सल ईस्पेरेन्टो एसोसिएशन (Universal Esperanto Association) तथा लियो सेमाश्को - दोनों अंतर्राष्ट्रीय इेस्पेरेन्टो दिवस के रूप में (15 दिसंबर) समन्वय कैलण्डर को ईस्पेरेन्टो के जनक डॉ. जमेनहॉफ का जन्म दिवस (1887 ई.) प्रस्तुत करते हैं। उसने एक संयुक्त (संगठित) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के लिए एक लंबे परिवर्तन के प्रारंभ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय द्विवभाषिता को परिचित कराया। यह भाषा भेदभाव को समाप्त करने का दिन है। यह युवजनों को विश्व के अत्यधिक समन्वयात्मक, शान्तिमय एवं भ्रातृतुल्य भाषा में सम्मिलित कराने वाला दिन है। यह विश्व के मनुष्यों के भाषाई मानवाधिकार मनाने का दिन है।

लियो सिमाश्को 5 मार्च को व्यक्तियों, राष्ट्रों-धर्मों एवं सभ्यताओं में-समस्त अनादरों, अपमानों एवं पूर्वग्रहों को माफ कर देने के "विश्व क्षमा दिवस" के रूप में समन्वय कैलण्डर को प्रस्तुत करते हैं।

डॉ. इविलीन लिण्डनर यू.एन. (संयुक्त-राष्ट्र) मानवाधिकार दिवस को (यू.एन. में 1948 में 10 दिसंबर को) विश्व मानवाधिकार घोषणा दिवस के रूप में स्वीकृत किया गया) अन्तर्राष्ट्रीय समान आदर एवं अधिकार एवं अपमान निवारण दिवस के रूप में परिवर्तित करने का सुझाव देते हैं। इस घोषणा का प्रथम सिद्धांत मानव जन्म से स्वतन्त्र हैं तथा मान-मर्यादा व अधिकारों में वे समान हैं।" सूचना-युगीन शालीन एवं सुव्यवस्थित समाजों के लिए यह मूलभूत रहता है।

टेटीयाना सिलुटीना जनवरी 10 को कैलण्डर के लिए बाल विश्व संचार दिवस के रूप में मनाने का सुझाव देती है जिसे वे अपने वयस्कों के साथ, सरकार एवं सांसदों सहित तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ मनाते हैं जो स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए सहायता करते हैं। इस दिन बच्चे सभी-माध्यमा (मीडिया) द्वारा वयस्कों तथा अन्य बच्चों के साथ समाज में बच्चों की

प्राथमिकता सहित, अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए खुला संवाद करने का अवसर प्राप्त करेंगे। वे 31 मई, को विश्व बाल दानशीलता दिवस (अन्तर्राष्ट्रीय बाल सुरक्षा एवं प्राथमिकता दिवस से पहले) मनाने का भी सुझाव देती हैं ताकि सभी धनी व्यक्ति औपचारिक रूप से सहायता पहुँचने का अवकाश मिलेगा।

तलगट अक्बशेव - प्रारंभक, नीना गान्चरोवा एवं क्लाड विजीयाउ-जो 1996 में शुरू हुई प्लानेट 3000 परियोजना के समन्वयकर्ता हैं चाह (4) तारीखों का सुझाव देते हैं जो परिस्थिति की एवं मनुष्यों की चेतना संस्कृति एवं धरती के समस्त तत्वों एवं मानवक्षमता के साथ उनके गहरे अंतर संबंधों के प्रति समर्पित हैं जो समन्वय का समर्थन करते तथा उनके विश्व के सह-निर्माता बनेंगे। साथ-साथ तीन अन्य तिथियाँ भी वे देते हैं जो विश्वनागरिकों, समस्त मनुष्यों की एकता एवं भूमण्डलीय संस्कृति के लिए समर्पित हैं। वे तिथियाँ निम्नवत् हैं:

22 मार्च :- रविवार सूरज अप्रतिबन्ध प्रेम एवं जीवन निर्माण का प्रतीक हैं।

10 जूलाई :- स्वच्छ जल दिवस स्वच्छ संकल्प खुलापन, पारदर्शिता तथा सूचना की स्पष्टता ये सभी स्वच्छ जल में व्यक्त होते हैं। स्वच्छ जल का सर्वोत्तम प्रतिमान (नमूना) बइकाल है। बइकाल के आठ अन्तर्राष्ट्रीय काल, (आह्वान) इर्कुट्स्क, बईकल्सक, टंका वेली, उलान-ऊडे, टांकोय इनको बच्चों एवं वयस्कों के पारदर्शी अन्तर संबंधों के सह-निर्मित समन्वय एवं शान्ति के लिए समर्पित किया गया है। ये इर्कुट्स्क पेडगोगिक लीग, समाज शिक्षा का अनुदेश केन्द्र, यूरेसियन परियोजना सईबेरिएन केन्द्र द्वारा संगठित एवं ब्युरियाटीया गणतन्त्र सरकार द्वारा प्रायोजित किए गये हैं।

22 जुलाई :- पर्वत-दिवस - यह आंतरिक शक्ति को जागृत करके जीवन की सही जिम्मेदारी उठाने की क्षमता जागृत करनेवाली मानव आत्मा के शिखरों का प्रतीक है। पर्वत मंच (माउन्टेन्स फोरम) का वार्षिक आह्वाहन 1996 से आलताइ में होता है। प्लानेट 3000 टीम एवं इरेशिएन परियोजना केन्द्र इसे आयाजित करते हैं तथा अलताइ गणतन्त्र सरकार द्वारा यह प्रायोजित किया जाता है।.

24 जून :- वायु दिवस - वायु भ्रमणशील व्यक्तियों का प्रतीक है जो नवजीवन यानी परिवर्तन के पंख लाता है। वायु श्वास एवं जीवन का सार है। जून पंखवाले संदेशवाहक बुध का माह है। जून 24 को अमेरिकी भारतीय, महान पंख वाली वायु की पूजा का दिवस मानते हैं।

3 सितंबर :- ग्रहीय संस्कृति दिवस - ग्रहीय संस्कृति हमारे ग्रह के लिए जिम्मेदारी पर आधारित नवीन संस्कृति है। धरती एक जीवित अविभाज्य त्रियेक (ट्रियून) एकता है। तीन (3) शरीर, आत्मा व अन्तरात्मा का एकत्व है।

9 सितंबर :- नये काल एवं सचेतन जीवन की ऊर्जा है। "3 व 9 राज्य" प्रेम समन्वय (मैत्री) एवं शान्ति के समाज को मूर्तरुप देता है।

17 अक्टूबर :- विश्व नागरिक दिवस - विश्व नागरिकों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा कांग्रेस अक्तूबर में होता है। मास्को में 9 सम्मेलन (कांग्रेस) हुए एवं दसवाँ सम्मेलन समरा में 17, अक्तूबर 2005 को आयोजित हुआ। जीवन जातिविधि हेतु वह अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा, सिविल संस्कृति का लोक विश्वविद्यालय, सार्वजनिक विकास फाउन्डेशन, "सीमारहित विश्व", शिक्षा

विलास हेतु फाउन्डेशन यूरेसियन परियोजाओं के लिए सइबीरियन केन्द्र फाउन्डेशन (संस्था) एवं शान्तिमय संस्कृति की ग्रहीय सिन्थसीस फाउन्डेशन के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित किया गया।

19 अक्टूबर :- गोलमेज दिवस - यह लोगों के बीच भाईचारे का, संस्कृतियों की एकता एवं सामूहिक सुव्यवस्थित सहयोग का प्रतीक है। अक्तूबर 19, 2005 को, 10 वाँ विश्व नागरिकों का सम्मेलन शिक्षा के फ्रेमवर्क में एक अन्तर्राष्ट्रीय गोलमेज संस्कृतियों का एकत्व आयोजित किया गया।

डॉ. मैत्रेयी बर्द्धन रॉय एवं डॉ. सुबीर बर्द्धन रॉय, जो कोलकता, भारत के विकलांग बच्चों के पैतृक संगठन के अध्यक्ष व सदस्य हैं, अप्रैल 2 को अन्तर्राष्ट्रीय प्रेम दिवस के रूप में विश्व के अन्यथा (डिफरेन्ट्ली) सक्षम बच्चों की प्राथमिकता व अधिकार हेतु प्रस्तावित करते हैं।

जॉन मेक्कोनेल ने समन्वय कैलण्डर के लिए दो तिथियाँ प्रस्तावित की हैं: मार्च 21 को " धरती दिवस" के रूप में उन्होंने 1970 में घोषित किया तथा दूसरा अक्टूबर 4 को " आशा दिवस" के रूप में।

इगोर शादखान, जो रूस के सुविख्यात निर्माता है हमारे कैलण्डर केलिए मार्च 14 को दादी व दादा दिवस के रूप में तथा सु:खी व प्रसन्न अवकाश-सा प्रस्तवित करते हैं जो पीढ़ियों का संबंध व्यक्त करता है।

राबर्ट एवं बारबरा मुलर (http://www.goodmorningworld.org) ने " सुख-शान्ति (हैपीनेस) दिवस" प्रस्तावित किया। संभवत: भविष्य में अन्य प्रस्ताव भी आएँगे।

संयुक्त राष्ट्रों द्वारा स्वीकृत विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस सहित प्रस्तावित तिथियाँ: महिलाएँ, स्वास्थ्य, ज्ञान, विज्ञान, कला, पर्यावरण इत्यादि युग में सुव्यवस्थित शान्ति की नयी संस्कृति के नए कैलण्डर के लिए आधार का निर्माण करते हैं।

जनवरी	01	:	धर्मों का स्वर्णिम नियम दिवस
जनवरी	10	:	बच्चों के लिए सूचना दिवस
जनवरी	12	:	न्याय और भूख व गरीबी उन्मूलन दिवस
मार्च	05	:	मनुष्य, राष्ट्र, धर्म व सभ्यताओं के लिए क्षमा दिवस
मार्च	14	:	दादी व दादा दिवस
मार्च	21	:	धरती दिवस
मार्च	22	:	सूर्य दिवस
अप्रैल	02	:	विश्व के अपहिज समर्थ (विकलांग) बाल प्रेम प्राथमिकता व अधिकार दिवस
मई	01	:	विश्वप्रेम दिवस

मई	15	:	चिरकालिक विवाद व संघर्ष से थके हुए लोगों के लिए समाधान दिवस
मई	31	:	विश्व बाल दयाशीलता दिवस
जून	01	:	सुरक्षा और बाल प्राथमिकता दिवस
जून	21	:	विश्व समवन्वय (सामंजस्य) दिवस
जून	24	:	वायु दिवस
जुलाई	10	:	स्वच्छ जल दिवस
जुलाई	22	:	पर्वत दिवस
जुलाई	30	:	शान्ति दिवस की नवीन संस्कृति
सितम्बर	03	:	ग्रहीय संस्कृति दिवस
अक्टूबर	04	:	आशा दिवस
अक्टूबर	17	:	विश्व नागरिक दिवस
अक्टूबर	19	:	गोलमेज दिवस
नवम्बर	11	:	युद्व विराम दिवस
नवम्बर	30	:	अन्तर्राष्ट्रीय विश्व बाल प्रतिज्ञा दिवस
दिसम्बर	10	:	अन्तर्राष्ट्रीय समान मान-मर्यादा, अधिकार और अवमान निवारण दिवस
दिसम्बर	15	:	अन्तर्राष्ट्रीय इस्पेरेन्टो व भाषाई मानवाधिकार दिवस
?	-	:	सुख - शान्ति दिवस?

+ विश्व अर्थ के अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों की स्वीकृति: www.UNmeditation.org

('विश्व' व 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द उनके सरलीकरण के लिए कैलण्डर दिवस शीर्षकों (टाइटिलों) से निकालने पर अर्थ होता है परन्तु यह कार्य युवकों का है।)

हम प्रत्येक व्यक्ति को, विशेषत: बच्चे एवं युवकों को सुव्यवस्थित (हार्मोनियस) शान्ति के सांस्कृतिक कैलण्डर के अनुसार भाग लेने के लिए आमन्त्रित करते हैं ताकि नयी शाताब्दि एवं सहस्राब्दि के कैलण्डर में नया दिन प्रस्तुत कर सकें। यह समन्वय कैलण्डर जो बच्चों से स्थापित हुआ है ताकि यह विश्व सामाजिक समन्वय सुनिश्चित कर सके। समन्वय कैलण्डर विविध जातियों मानवजातियों एवं विश्व की सभ्यताओं के लिए सामान्य है। हमें जोड़ता है तथा हमें अलग करनेवाले युद्व कैलण्डरों व संस्कृतियों के विकल्प प्रस्तावित करता है समन्वय कैलण्डर आगमी पीढ़ियों को इस आशा से हस्तांतरित करना (सौंपना) हमारा कर्त्तव्य है कि यह कभी भविष्य में युद्व व शत्रता कैलण्डरों द्वारा बिना अलग किए, अपने विकास एवं उत्सव में एक कर रखें।

हम अपना संबोधन हस्ताक्षरों के लिए खुला रखते हैं तथा सदस्य (अपने परिवर्धनों (एडीशन्स) एवं विनिर्देशों (स्पेसीफिकेशन्स सहित) सहित। एक तरफ बच्चों, युवाजनों व अगामी पीढ़ियों की इस जिम्मेदारी को मान्यता दे सके तथा दूसरी तरफ बच्चों एवं युवजनों द्वारा जो युद्व के बदले समन्वय द्वारा शान्ति की आकांक्षा कर सके।

हमारा सम्बोधन (भाषण) यू.एन, (UN) युनेस्को (UNESCO), युनीसेफ (UNICEF) तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के लिए भी खुला (मुक्त - ओपन) है जिन्हें निर्देशित किया जाएगा। हमारी शान्ति पहल में हम उनके समर्थन की आशा करते हैं जो हमारे सुव्यवस्थित (हार्मोनियस) युग कैलण्डर में जोड़नेवाली मूल्यों का पता लगाने में उनकी सहायता करेंगे।

9 मई, 2006

4. सामाजिक समन्वय का अनेकत्व, शान्ति संस्कृति एवं उसका कैलण्डर एवं उन्हें निष्पादित (उपलब्ध) करने के उपाय

जॉन मैक्कोनेल

धरती दिवस का इक्योनवे (91) वर्षीय संस्थापक

भविष्य के लिए आशा

क्या धरती ग्रह पर जीवन के भविष्य के लिए कोई आशा है?

"आशा का नक्षत्र"

धरती ग्रह के लिए यदि हम आसमान पर आशा के प्रतीक के रूप में एक चमकते "सितारे" (नक्षत्र) का आरम्भ कर सकें तो बढ़िया (महत्वपूर्ण) रहेगा।

जब भगवान के अस्तित्व एवं हमारी मृत्यु के उपरान्तवाली स्थिति से सम्बन्धित बहुत ही कठिन प्रश्न उठेगा तब हम "अमोघनीय रहस्य" के शिकार बन जाएँगे। मेरे पास तो जवाब नहीं है। मैं देख रहा हूँ कि ईमानदार प्रेम (सृजनात्मक परोपकारिता) लोगों एवं ग्रह को लाभ पहुँचाता हैं एवं मानव साहस कार्यों से आगामी पीढ़ियाँ के लिए मार्ग दर्शक होंगे। आखिर "जीवन का अर्थ क्या है"?

यह मेरे लिए बहुत ही रहस्य का विषय है कि बुश एवं अन्य पश्चिमी नेता यह कैसे कहेंगे कि उन्होंने किस प्रकार ईसा मसीह (Christ) के प्रेम का प्रयोग किया एवं अपने शत्रुओं को कंकालों में बदलनेवाले शैतानी हथियारों एवं फौजी कार्यक्रमों के लिए अरबों डालर्स खर्च करते हुए यह कहते हैं कि वे परिवर्तित हो गये जबकि पुराने जमाने में महान ईसाई नेताओं ने शत्रुओं को अपने मित्र बनाने का प्रयोज दिये।

प्रेम व विश्वस के साथ संघर्ष का अहिंसापूर्ण संकल्प (समाधान) हो सकता है। इतिहास इसका प्रमाण है, साक्षी है। मैंने अपने जीवन में तथा व्यवहारों में इसे सच साबित किया है।

4 अक्टूबर विश्व (सार्वत्रिक) अवसर

भूमि ग्रह पर शान्तिपूर्वक प्रगति के लिए सर्वोत्तम मार्ग

1957 में, मैंने अपनी साप्ताहिकी नार्थ केरोलीना 'टो वेली व्यू' (Toe Valley View) समाचार पत्र में एक सम्पादकीय के लिए विश्व का ध्यान अकर्षित किया। उसमें यह अनुरोध किया गया था कि हम एक ऐसा उपग्रह प्रारम्भ करेंगे तबि हर रात उज्जवल प्रकाश से समस्त मनुष्य जाति को आशा के एक उज्जवल नक्षत्र की तरह दिखाई पडेगा।

प्रथम उपग्रह स्पुतनिक (Sputnik) का 4 अक्टूबर को, यानी अभी-अभी प्रारंभ हुआ। किसी भी माध्यम (मीडिया) को इस बात पर ध्यान देते नहीं पाया गया कि यह "सेंट फ्रान्सिस का प्रीतिभोज दिवस" था। और वह भी ईश्वर रहित यू.एस.एस.आर. द्वारा! (जिस व्यक्ति ने इस तारीख को चुना, वह अवश्य कोई गुप्त ईसाई होगा।)

मेरा अपना अध्ययन एवं प्रार्थना इस दृढ़धारण तक पहुँचा कि हमें एक ऐसी सामान्य प्रयोजन की अवश्यकता है जो सब प्रकार के मनुष्य को अपील करेगा और उस पर ध्यान आकृष्ट करने का मार्ग दिखाएगा। हमें कुछ ऐसा चाहिए जो इतिहास के युद्व व अन्याय का भयंकर रिकार्ड समाप्त कर दे।

जब हमने अंतरिक्ष की खोज में धरती को खोज लिया। अब हम ने यह जान लिया कि हम सब एक परिवार के हैं और एक ही धरती है।

परन्तु हमारी युद्व का व्यसन एवं हमारी लालच ने धरती ग्रह एवं उसकी प्रजा को लगभग पूर्णत: नाश कर दिया। यदि हम मानव साहस-कर्म (एड्वेन्चर) कायम रखना चाहें तो ठीक उसी समय "हमें अवश्य बदलना है", पर ध्यान देना पडता है।

4 अक्तूबर समाधान

शान्ति के लिए सेंट फ्रान्सीस की प्रार्थना

हे ईश्वर! मुझे अपनी शान्ति का साधन बनाओ।

जहाँ ईर्ष्या-द्वेष हो वहाँ प्रेम बोने दो।

जहाँ छोंट हो - वहाँ हो क्षमा।

जहाँ शंका हो - वहाँ हो विश्वास।

जहाँ निराशा हो - वहाँ हो आशा।

जहाँ अंधकार हो - वहाँ हो प्रकाश।

जहाँ दु:ख हो - वहाँ हो आनंद।

मुझे ऐसा वर दो कि

सान्त्वना पाने की जगह

मैं दूसरों को सान्त्वना दूँ।

समझे जाने की जगह

मैं दूसरों को ही समझ पाऊँ।

प्यार किए जाने की जगह

दूसरों से प्यार करूँ।

प्राप्त करने में जो नहीं

वह दूसरों को देने में है।

क्षमा प्राप्त करने से ज्यादा

दूसरों को क्षमा करने में है।

तथा महानता मृत्यु में है

क्योकि हम शाश्वत जीवन हेतु पैदा हुए हैं।

सेंट फ्रान्सिस की यह प्रार्थना प्रत्येक जाति एवं संस्कृति के लोगों को अच्छी लगती है। 4 अक्तूबर 2007 के दिन आशा उपग्रह नक्षत्र प्रारंभ करने के लिए अंतरिक्ष कार्यक्रम की योजना अभी बनानी होगी। अंतरिक्ष में यह हमारी 50 वी वर्षगाँठ होगी। सेंट फ्रेन्सीस ने जो विश्वशान्ति दी उस प्राप्त करने का अद्‌भुत मार्ग यही है एवं यह विश्व का ध्यान आकर्षित कर सकती है। www. earthsite.org

रूडोल्फ सीबर्ट
स्वर्णिम नियम

आधुनिकता से आधुनिकोत्तर को बदलने वाले वर्तमान संक्रमण काल में पहले ही धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष, प्रकटन एवं स्वायत्त कारण, विश्वास एवं ज्ञान के बीच मुक्त द्‌वन्द्‌वात्मक (डायलेक्टिक) धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति, विकास एवं प्रबुद्‌धों के बीच सहयोग को परियोजना विश्व लोकाचार (स्वभाव) के विषय में संभव कर सकेगा। यह स्वर्णिम नियम में केन्द्रित होता है जो सामान्यत: चीनी धर्म, हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्‌ध धर्म, जेविश (Judaism), ईसाई धर्म एवं इस्लाम तथा अन्य विश्व धर्मों में विद्यमान है। स्वर्णिम नियम (गोल्डन रूल) न केवल सम्पूर्ण हिब्रू नियम व नबियों को (पैगम्बरों को) भी को गले से लगा लेता है, बल्कि नवविधान एवं कुरान को भी आलिंगन करता है। साथ अनेक प्रबुद्‌ध व्यक्तियों एवं मानव वादियों को, स्वर्णिम नियम को विश्व लोकाचार (प्रकृति) के आधार पर स्वीकृत करने में कोई समस्या नहीं।

स्वर्णिम नियम अपने चीनी रूप में बताता है:

तुम दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करो जो तुम अपने साथ उनके द्‌वारा होगा नहीं

हिन्दू रूपमें स्वर्णिम नियम कहता हैं :

कर्तव्य का सार यह हैं: तुम्हें जो दु:ख होता है वैसा दूसरों के साथ नहीं करो।

स्वर्णिम नियम अपने बौद्ध रूप में सिखाता है:

जो भी दशा (अवस्था) मेरे लिए सुखद या आनंदप्रद नहीं, वह उसे भी ठीक वैसा ही रहता है। मेरे लिए जो सुखद या आनंदप्रद नहीं है उसे मैं दूसरों को कैसे दूँगा?

जैन धर्म का स्वर्णिम नियम कहता है:

जो भी व्यवहार अपने साथ जो होना चाहता है, वही व्यवहार सभी प्राणियों के साथ करें।

अपने जेवीश रूप में स्वर्णिम नियम कहता है:

तुम दूसरों के साथ वैसा न करो जो उनसे तुम नहीं चाहते हो।

अपने ईसाई रूप में स्वर्णिम नियम सिखाता है:

दूसरों के साथ तुम हर व्यवहार (काम) वैसा करो जैसा तुम उनसे चाहते हो।

अपने इस्लाम रुप में स्वर्णिम नियम यों बताता है:

कोई तब तक विश्वासी नहीं बनता जब तक वह अपने भाई के लिए भी वही चाहता है जो वह स्वयं अपने लिए चाहता है।

यदि विश्व वैकल्पिक भविष्य -111 (Future 111) प्राप्त करना हो तो, स्वर्णिम नियम के इस मूलभूत सिद्धांत के आधार पर चार नीतिपरक निदेश, जो सभी मानवजाति के महान विश्वधर्मों में पाये जाते हैं, उन्हें याद करना चाहिए:

1) तुम्हें हत्या, उत्पीड़न, यातना, चोट इनमें से किसीको भी नहीं अपनाना है। विचार कभी भी तो सकारात्मक रूप में होना चाहिए : और जीवन के प्रति आदर होना चाहिए। मृत्यु की अपेक्षा तुम्हें जीवन व प्रेम संस्कृति के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए।

2) तुम्हें असत्य, धोखा, जालसाजी, एवं चालबाजी नहीं करनी चाहिए। इस निदेश का सकरात्मक अर्थ है: तुम्हें सत्य बोलना चाहिए एवं सत्यनिष्ठ रहना चाहिए। तुम्हें सत्यनिष्ठा एवं सहिष्णुता की संस्कृति के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए।

3) चोरी, शोषण, लूट, रिश्वत, एवं भ्रष्टाचार को नहीं अपनाना चाहिए। इस निदेश का सकारात्मक अर्थ है: तुम्हें ईमानदारी एवं न्यायपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें न्याय की संस्कृति के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए।

4) लैंगिकता, कपट, अपमान, अनादर से किसी को अपशब्द नहीं कहना (गाली देना) चाहिए। इस निदेश का सकारात्मक अर्थ है: तुम्हें आपस में आदर व प्रेम के साथ रहना चाहिए। तुम्हें हिस्सेदारी एवं पुरूष व महिला के समान मान-मर्यादा की संस्कृति के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए।

रीमोन बाचिका
शान्ति कैलण्डर का मूलाधार

लियो सिमाश्को ने बहुत ही सशक्त ढंग से तथा विश्वासोत्पादक तरीके से आगामी पीढ़ियों के लिए शान्तिमय संस्कृति एवं सामाजिक समन्वय बढ़ाने वाले कैलण्डर के विचार को विशिष्टता दी। हाँ, हम वरिष्ठ व्यक्तियों ने 20 वीं सदी के उपद्रवों व अत्याचारों का सामना किया तथा या तो जान गवाँया या मरने को मजबूर हो गये। एक अनुमान (आकलन) के अनुसार विश्वभर में 187 करोड़ (मिलियन) लाख इस प्रकार हो गये। *(हॉबस्बाम, ई. एन एज ऑफ एकस्ट्रीम्स: द शार्ट हिस्टरी ऑफ द ट्वन्टीएथ सेन्चुरी 1914–1994. लण्डन: पेंग्वीन बुक्स, 1994)* सह मनुष्यों द्वारा जो दु:ख, विपत्ति, एवं वेदना प्राप्त हुई, वे अवश्य जबरदस्त, डरावना, व अवर्णनीय रही होंगी। क्या यह मनुष्य जाति कभी सीखेगी? यदि मनुष्य के इस पागलपन को उलटा (रिवर्स) करना हो तो बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। कल के अधिकारी बनने वाले आज के युवकों को अपील करते हुए, "शान्ति कैलण्डर अपनाने का" जो काम है, उसे "बहुत ही आवश्यक समुचित कदम" ही कहना पडेगा। परवर्ती के सम्बन्ध में हम इतना कहेंगे : "हम वही जो हम आयोजित करते हैं"। (व्ही आर व्हाट व्ही सिलब्रेट) (अमिताई एट्जोनी एवं जारेद ब्लूम: द्वारा सम्पादित पुस्तक का नाम, उपशीर्षक है अवकाश –दिन एवं धार्मिक अनुष्ठानों को समझ लेना – पेपर बैक दिसंबर 2004।

जो मूलाधार है, वह मेरे लिए स्वयंसिध्द हो, मैं इसे मूल्यों एवं प्रतीकार्थ के रूप में सैद्धान्तिक तौर पर सूत्रबद्ध करना चाहूँगा। ये दोनों संस्कृति के क्रोड़ (कोर) लक्षण है तथा दूसरे ढंग से हृदय व मन के चेतन अचेतन लालसाएँ है, मनोभावों एवं बुद्धि के उत्प्रेरक हैं।

मूल्य वही हैं जिन्हें लोग पाना चाहते हैं जो विविध मार्गों द्वारा उन्हें संतुष्ट करते हैं। उन में से कुछ हैं: आर्थिक सुरक्षा, शारीरिक स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं आनंद सामाजिक मान-मर्यादा, वैयक्तिक सम्पूर्णता, आजादी की भावना, स्नेह एवं प्रेम। पैसे का एक ऐसे मूल्य के रूप में अनुभव होता है कि उसे दूसरे मूल्यों के रूप में बदला जा सकता है। अत: उसका असीम आकर्षण है सभी आधारभूत मूल्य, अन्य मूल मानवीय संतोषों (तुष्टियों) की तरह अपरिवर्त्य (इनकन्वर्टबिल) हैं। दूसरे शब्दों में, हर एक मूल्य निर्दिष्ट तुष्टि के लिए माँगा जाता है। प्रत्येक मनुष्य विविध समयों में विविध मूल्यों की अपेक्षा करता है। अत: हमारे अपने भीतर भी यह प्रमाणित होता है हम जो चाहते हैं उसे संगत (समस्वर) कर लेना कठिन है। फिर सामूहिकता एवं मानवता ही के मूल्यों को संगत (समस्वर हार्मोनिईज करना) करना कितना ज्यादा कठिन है?

प्रतीक (प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ) जो होंगे वे मूल्यवान वस्तु के ठोस (मूर्त) बिंब (इमेजस) हैं। प्रतीक तुष्टि (संतोष) को घोषित (विज्ञापित) करते हैं। राष्ट्रध्वज एवं मानवजातीय संस्कृति – धार्मिक हो या मानव जातीय परिधान (पोशाक), चादर (घूँघट) दाढ़ियाँ, मुंडे हुए सिर, इत्यादि मानव जाति के समुदायों या अन्य समूहों से सम्बन्धित हैं। ये सम्पत्तियों एवं सामान्य बंधनों की सुरक्षा का सुझाव देते हैं। धार्मिक अनुष्ठान, विवाह, उत्सव, ओलम्पिक का प्रारंभिक उत्सव, विश्व सॉकर खेल इत्यादि मूल्यों के ही समारोह हैं। फैशन शो शारीरिक लालित्य एवं सुन्दरता को विज्ञापित करते हैं।

मूल्य एवं प्रतीकात्मकता के परिप्रेक्ष से देखने पर यह ज्ञात होता है कि धर्म–विश्व शान्ति एवं महान सामाजिक समन्वय (हार्मोनी) की ओर ले जाने वाले मूल्यों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामान्य धार्मिक मूल्य भले ही सरलता से नहीं अपनाये जाते, लेकिन संभव है क्योंकि मानव सुख–शान्ति के संसाधन विश्वव्यापी (सार्वत्रिक) हैं तथा संख्या में सीमित। प्रतीक का सम्मान करते हुए, धर्म स्वयं को एक द्वैत स्थिति में पाते हैं। निराली भक्तमंडलियों (सभाओं) को यथावत् रखने के लिए, धर्मों को अपने विशेष (सुस्पष्ट) प्रतीक, अनुष्ठान एवं समारोहों को बढ़ाना एवं बनाए रखना आवश्यक है। इस संबंध में एकता चाहना मूर्खता है। धार्मिक विविधता मानव संस्कृति की सम्पन्नता का प्रतिनिधित्व करती है। तो भी एकता का अनुभव करने के लिए यदि धर्म कुछ सामान्य प्रथाएँ (कस्टम्स) अपनाएँ तो वे बड़ी सहायक सिद्ध होंगी। उदारहण के तौर पर एक सामान्य कैलण्डर विषय (इवेन्ट) जैसा कि एक विश्व स्वर्णिम नियम दिवस, या एक विश्व शान्ति दिवस या एक विश्व धार्मिक कृतज्ञता ज्ञापन (आभार प्रदर्शन) दिवस इत्यादि। इसका तो बृहत महत्व है। यह समान्य मूल्य एवं सामान्य विश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। जब एक बार सैकड़ों करोड़ों – मनुष्यों के विश्वास की शक्ति, शान्ति एवं मानव समन्वय (मैत्री) की तरफ निर्देशित होता है तब यह विश्व बदलेगा। (और विस्तार के लिए कृपया रिमोन बाचिका का "धार्मिक क्षेत्र में समन्वय की ओर: प्रतीक एवं मूल्यों पर केन्द्रीकरण" देखें।) (http:// www.peacefromharmony.spb.ru/?cat=en_c&key=24)

हेराल्ड बेकर
प्रेम व समन्वय (हार्मोनी)

जब हम अपने ही मन के भीतर हर क्षण रहने वाली बिना शर्त की प्रेमशक्ति से परिचित हो जाएँगे, तब हमारी जीवन–यात्रा की दिशा बदल जाएगी। समुचित सम्पत्ति से प्राप्त होने वाली मानसिक शान्ति, प्राकृतिक सामंजस्य (समन्वय) हेतु यह बोध एक नयी निकटता (एप्रोच)प्रारंभ करेगा। अर्थात जैसे ही हम इस असीमित प्रेम को बडी ईमानदारी से व्यक्त करना प्रारम्भ करेंगे तब वह समाज के ढाँचे को पूर्णत: बदल देता है। जैसे जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते रहेंगे, और एक दूसरे से मिलते रहेंगे इस शक्ति द्वारा हर वस्तु एवं हर मनुष्य उल्लेखनीय ढंग से प्रभावित हो जाएगा।

प्रेम की चेतना द्वारा सभी वस्तुएँ नवीनता प्राप्त करेंगी तथा हमें पूर्णता प्रदान करेंगी। प्रेम भाव में यह एक ऐसी बुद्धिमानी (प्रज्ञा) (विज़डम) है जो विभाजित विश्व के विचारों व परिप्रेक्ष्य के बीच की दूरी दूर करके सेतु निर्माण करती है तथा समस्त वस्तुओं से हमारा संबंध पूर्ववत् बनती है। अधिक समुचित एवं बिना किसी शर्त के, जो जहाँ पहले नहीं था एवं शायद असंभव भी प्रतीत होता था वहाँ प्रेम अन्तर्लीन होकर और अधिक गहराई से उत्पन्न होता है।

जब हम अपने बारे में जानना चाहते हैं तो ये प्रश्न सामने आते हैं कि हम कौन हैं, क्या और क्यों करते है तथा क्या प्रतिक्रया व्यक्त करते हैं। दु:ख का प्रतिबिंब दु:ख होगा उनकी वेदना हमारी वेदना होगी एवं दूसरों का क्रोध हमारा क्रोध बन जाएगा। इसी को हम प्रकृति के चेहरे में भी देख सकते हैं। उसका विनाश हमारा विनाश है एवं उसका सौन्दर्य हमारा सौंदर्य। उसी प्रकार हम अपनी संभाव्यता को अपने बच्चों में और आनंद को भी उन में दर्शन करते हैं। यह **बेतरतीब** अभिव्यक्ति हमारे विचारों की अभिव्यक्ति है जो मूर्तरूप धारण करना चाहती है। यह हमारा निरन्तर अनुस्मारक है कि प्रेम उत्तर है और प्रश्न भी। यदि हमें दूसरों में प्रेम देखना हो तो पहले प्रेमभाव हमारे मन में होना और अवगत करना है। जब हम उसे बाहर प्रकटित करना चाहते हैं तब इस वर्तमान स्थिति में हमें एक नई वास्तविकता निर्मित करते है। जब हम भय की तुलना में प्रेम को, द्वेष की जगह दया को, अलगाव के बदले एकता को, युध्द स्थान में शान्ति को चुनेंगे तब हम मनुष्य जाति के लिए एक नया प्रतिबिंब– यानी ... "अपने से प्रेम" लाएँगे।

लियो सेमाश्को

टेट्रासोशियोलॉजी : सूचनात्मक समाज का सुव्यवस्थित युग के लिए सामाजिक दर्शन

प्रत्येक सभ्यता का हर समाज अपने इतिहास में कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को मनाने के लिए कुछ विशिष्ट कैलण्डर दिनों को अंकित करता है।

कैलण्डर सांस्कृतिक मूल्यों का हर दिन स्मरण दिलाते रहते हैं। पश्चिमी सभ्यता में, औद्योगिक समाज युग जो 17वीं सदी में प्रारंभ हुआ वह 20वीं सदी के मध्य तक रिस्क सोसईटीस (अलरिच बेक, 1992) में विस्तरित हुआ। ये कैलण्डर दिन आजादी मनाने के लिए कैलण्डर दिन अंकित किए गये जो सभी पैमाने पर राष्ट्रीय मुक्ति क्रान्ति एवं युद्धों द्वारा–यानी स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं विश्व युद्धों–द्वारा प्राप्त हुई। इन कैलण्डरों ने सशस्त्र संघर्ष द्वारा प्राप्त आजादी की संस्कृतियों को मनाया है। लगभग वर्ष में युद्ध के कारण का प्रत्येक दिन जीत या हार की घटना से अंकित हैं। लगभग प्रत्येक दिन क्रान्ति, मुक्ति, स्वतन्त्रता, जीत एवं स्थल, वायु व जल सेना के विविध युद्धों को प्रस्तुत करता है। हर घटना एक समुचित फौजी परेड से याद की जाती है।

औद्योगिक खतरा (रिस्क) संघ (आई–आर–संघ) युद्ध में लिप्त हैं या युद्ध की तैयारी में। अत: उनके कैलण्डर फौजी महत्ता की घटनाएँ रिकार्ड करते हैं। एतद्वारा शान्ति की अपेक्षा युद्ध संस्कृति बनी रहती है। इसका मूलाधार है "यदि तुम शान्ति चाहते हो तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।" सई, विस, पेसिम, पेरा बेल्लम (Si vis pacem, para bellum) आजादी की संस्कृति युद्ध , आतंक, हिंसा एवं अपमान के रूप में बदल गई है। पश्चिमी सभ्यता के आई आर संघों पर फौजी तैयारी के व्यय युद्ध सामग्री का संचयन, फौजी प्रबन्धन के खतरों द्वारा, परमाणु विनाश के खतरे सहित तथा मूर्खतापूर्ण फौजी युद्धों में नाश होनेवाले बेगुनाह जवानों की बढ़ती संख्या में मरने का खतरा निरन्तर बढ़ता जाता है।

20वीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान, आई आर संघों की संस्कृति के भीतर एक विश्व सूचना संघ विलीन होने लगा जो अग्रवर्ती दशा में सुव्यवस्थित हो सकता है। सुव्यवस्थित सूचना संघ ने (हाई–संघ) अपनी विनाशात्मक प्रवृत्तियों द्वारा समन्वय पर नया जोर देते हुए आई आर संघों की स्वेच्छाओं एवं प्रौद्योगिकी उपलब्धियों को ढूँढ़ते हुए सूचना एवं स्थायी (चिर) शान्ति को बाँट लिया। यह नयी–संस्कृति अगली संस्कृतियों की सर्वोत्तम विशेषताओं पर धीरे–धीरे निर्मित होती है तथा समाजिक समन्वय का नया आर्डर बनानेवाले नयी सामाजिक प्राथमिकताओं व मूल्यों का परिचय देते हुए क्रमश: विविध सभ्यताओं की यानी पूर्व व पश्चिम, उत्तर या दक्षिण) उपलब्धियों को संश्लेषित करती है। यह आर्डर (क्रम) एक ऐसा आर्डर (क्रम) हैं जो पहले समन्वित एवं संवादात्मक था, वह एक विविधता/भिन्नता की सन्तुलित एकता का प्रतिनिधित्व करती है। (क्रेग कैल्होन द्वारा उनकी पुस्तक "आलोचनात्मक (क्रिटिकल) सामाजिक सिद्धांत" 2003 में एक सांस्कृतिक भिन्नता एवं उसका ऐतिहासिक अर्थ अन्वेषित किया गया है।) बच्चों की प्राथमिकता के आधार पर ऐसा आर्डर एक समन्वयात्मक शान्ति/आर्डर का समरूप है जिसे सामाजिक समूहों एवं मानवजातियों के कायम रखने योग्य बनाते है। किसी हाई सोसाईटी के लिए बच्चे तथा उसका शान्तिमय, एकीकृत आर्डर (क्रम) भी प्रधान आधार के रूप में रहते हैं।

विविध मानवजातियों एवं सभ्यताओं का सुव्यवस्थित क्रम (आर्डर) प्राचीनतम एवं अतिव्याप्त को साकार रूप देता है एवं इस कारण समस्त संस्कृतियों के लिए अत्यन्त प्राकृतिक मूल्य है – समन्वय (हार्मोनी)। समस्त सभ्यताओं में सामाजिक समन्वय का विचार विकसित हुआ परन्तु प्रथमत: कन्फयूसियनिज़्म (Confucianisim) एवं बुद्ज्मि (Buddhism) में हुआ। साथ दक्षिण अफ्रीकी वासियों, भारतीयों तथा अन्यों में भी हुआ। प्रोफेसर रिचर्ड् नीसबेट् का (2005) उपसंहार कि "समन्वय पूर्वी एशियाई दर्शन में केन्द्रीय विचार" है को पूर्व एवं दक्षिण की मूलभूत संस्कृतियों को आरोपित किया जा सकता है। वह होमर की कविताओं में पश्चिमी सोच में तथा पईथागरोस, प्लेटो, अरीस्टोटिल की विचार धाराओं में व पुनर्जागरण एवं लीबनीट्ज (Leibnitz) के युगों में भी प्रकट हुआ। फिर भी, समन्वय नहीं था परन्तु यूरोप एवं अमेरिका के तेजी से विकसित होने वाले औद्योगिक संघों–(सोसाईटीज) के लिए आजादी एक प्राथमिक मूल्य बन गयी। लेकिन समन्वय विचार आज भी पश्चिमी सभ्यता में जीवित है। अत: सभी सभ्यताओं के सामान्य (परन्तु एक विभिन्न मात्रा में) मूल्य के रूप में एक सूचना युग में सामाजिक समन्वय युग को आधार प्रदान करता है। इस युग के लिए कैलण्डर ने विश्व समन्वय दिवस पर विशेष कैलण्डर में – शान्ति, प्रेम, न्याय, धमों का स्वर्णिम नियम, क्षमा, आजादी, समानता, भाईचारा, सुख–सन्तोष एवं अन्य, प्रधानत: आगामी पीढ़ियों, युवजनों एवं बच्चों के लिए महत्वपूर्ण अविच्छेद्य मूल्यों के लिए, स्थान हम देखते हैं।

अतीत के संघों (सोसईटीज) में सुव्यवस्थित संस्कृतियाँ समाजिक समर्थन (सोशल एक्टर्स) प्राप्त नहीं कर सकीं। अत: वे लगभग सभी सभ्यताओं में अधिक (पश्चिम में) या कम (पूर्व में) न्यूनतम भी। केवल हाई सोसईटीज में संस्कृति तथा सामाजिक समन्वय क्रम को (आर्डर) विस्तृत एवं सहज – सामाजिक समर्थन (सपोर्ट) मिलता है जिसमें मैंने आबादी के चार क्षेत्रों के रूप में सामाजिक पुनरुत्पादन के चार क्षेत्रों में नियोजित की थी जो (क्षेत्र व क्षेत्र वर्ग) सामाजिक क्रम (आर्डर) पुनरत्पादित करते हैं। वे विविधता के सुव्यवस्थित (हार्मोनियस) आर्डर का समर्थन करते हैं। इन समन्वयात्मक वर्गों (क्लासेस) के आधार पर, समस्त सभ्यताओं के हाई–सोसईटीज एक समन्वय संस्कृति प्राथमिक बन जाती एवं बच्चों को प्राथमिकता देते हुए सुव्यवस्थित विश्व सामाजिक आदेश उत्पन्न करती है। इस सुव्यवस्थित सामाजिक ढांचे में क्षेत्र वर्गों की प्रकृति की टेट्रासोशियोलाजिकल सिद्धांत में सोदाहरण व्याख्या की गयी जो प्रधानत: समन्वय को पूर्वी मूल्य विचार को एवं प्रबल रूप से सामाजिक क्षेत्रों के पश्चिमी ढ़ांचा विचार से एकीकृत (मिलाते) करते हैं। आखिरी संकल्पना को हमारे समय के अनेक सिद्धांतों में प्रवर्तित किया गया है। ए. गिड्डिेन्स (1990), एल. स्कलार (1991), आर. रॉबर्टसन (1992) प्रत्येक तीनों सामाजिक क्षेत्रों का वर्णन करते हैं। यु. बेक (1998) एवं जि टेर्नबार्न (2002) चार क्षेत्रों (स्फिएर्स) का वर्णन करते हैं। ए अप्पादुरई (1996) पाँच क्षेत्रों का वर्णन करते हैं क्षेत्रों व क्षेत्र वर्गो की विस्तृत चर्चा के लिए कृपया हमारा वेब साईट–http://www.peacefromharmony.org/docs/2-1_eng.pdf. पर "टेट्रासोशियोलॉजी : चुनौतियों के उत्तर"' 2002 देखें।

स्वामित्व एवं धन–सम्पत्ति द्वारा परिभाषित वर्गों के धर्माधिकार तन्त्र के बदले (उच्च, मध्यम एवं श्रमिकवर्ग) के समन्वय को स्थापित करके, ऐसे बच्चों व युवजन समूह को जिसके पास, हाई सोसाईटी में महानतम सूचना आवश्यकताएँ दक्षताएँ एवं अन्तश्शक्ति हैं – एक बजटीय प्राथमिकता सौंपती है। बच्चों की गुणवत्ता हाई सोसाईटी की गुणवत्ता को परिभाषित करती है या दूसरे शब्दों में उसकी सामाजिक गुणवत्ता बच्चों पर निर्भर रहती है। समन्वय की नवीन संस्कृति में जिसे "क्षेत्र संस्कृति" भी कहा जा सकता है, प्राथमिकता उद्योग पर नहीं बल्कि सामाजिक क्षेत्र पर रखी जाती है जिसका बचपन संबधी उपक्षेत्र एक केन्द्रीय भाग है। नवीन सुव्यवस्थित आर्डर में प्राथमिकता फौजी–आर्थिक काम्प्लेक्स (सम्मिश्र) की आर्थिक शाखाओं पर नहीं बल्कि शैक्षिक स्वास्थ्य कॉम्प्लेक्स की सामाजिक शाखाओं पर है। बच्चों की प्राथामिकता पर और अधिक चर्चा के लिए कृपया http://www.peacefromharmony.org/docs/2-4_eng.pdf. देखे।

यह समन्वय संस्कृति क्षेत्र वर्गों में (स्फियर क्लासेस) लोकतान्त्रिक शक्ति के एक नये बँटवारे को बढ़ावा देता है। इस लोकतन्त्र में या "क्षेत्र लोकतांत्रिक" में http://www.peacefromharmony.org/?cat=en_c&key=13, समस्त आबादी समूह लोकतन्त्रिक चुनावों में समुचित प्रवेश प्राप्त करते हैं। समन्वय संस्कृति, माता-पिता द्वारा प्रयोग किए गये मताधिकार बच्चों को देती है जो माता-पिता, दादा-दादी, शिक्षक, डाक्टर्स, काउन्सिलर्स एवं अन्य के अरगिवर्स से निकट से समूहों द्वारा "बच्चों की प्राथमिकता" के लिए समर्थन का शक्तिशाली आधार उत्पन्न करती है। ये समूह बच्चों के साथ मिलकर किसी भी दिए गये देश की आजादी 50% से 80% तक समाविष्ट रहते हैं। इस प्रकार समन्वय की संस्कृति बच्चों, युवजनों एवं आने वाली पीढ़ियों की रक्षा करने के लिए, शान्ति एवं अहिंसा पर केन्द्रित करते हुए एक शक्तिशाली आधार उत्पन्न करती है। सांस्कृतिक रुप से भिन्न होने वाले समूहों में धार्मिक, मानव जातीय एवं जातीय संघर्षों को बदलने में बच्चों की प्राथमिकता भी सहायता करती है। समन्वय संस्कृति की ये शक्तियाँ, जब बच्चों के लिए उत्तम जीवन बनाने पर केन्द्रित हुए तब गरीबी की स्थायी बनानेवाली शर्तों के लिए आर्थिक औचित्यों को महत्वपूर्ण बनाती हैं। क्षेत्र (स्फियर) वर्गों एवं बच्चों की प्राथमिकता के आधार पर समन्वय, की एक संस्कृति, एक समन्वय एक सामाजिक आर्डर के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ उत्पन्न करती है जो टेट्रासोशियोलॉजी में अपनी सैद्धांतिक स्पष्टीकरण यानी एक उत्तर-अनेकावादी (पोस्ट-प्लुरालिस्टिक) सामाजिक दर्शन-देखते हैं। (उत्तर-अनेकत्व-पोस्ट प्लुरालिज्म) विरोध तो नहीं करता प्रत्युत अनेकत्व के दर्शनशास्त्र (तत्वज्ञान) फिलॉसफी-ऑफ प्लुरालीज्म) को सुदृढ़ एवं विकसित करता है। संस्कृति की सृजनात्मक प्रकृति को जेफ्फरी अलेक्ज़ांडर ने अपनी पुस्तक "सामाजिक जीवन का अर्थ: एक सांस्कृतिक समाजशास्त्र" (2003) में प्रारंभ किया है।

इस प्रकार, टेट्रासोशियोलॉजी (Tetrasociology) के अनुसार बच्चों पर एक प्राथमिकता रखना समग्र सामाजिक समन्वय प्राप्त करने का एक साधन है। जो माता-पिता द्वारा निष्पादित (एग्जिक्यूटेड) आवश्यक बच्चों के मताधिकार विधि निर्माण द्वारा स्थापित किया जाता है। माता-पिता प्रथमत: युवा एवं भावी माता-पिता एवं उनसे बहुत ही निकटता से जुड़े सामाजिक वर्ग भी (शिक्षक, डाक्टर्स-(चिकित्सक) एवं चाईल्ड केरगिवर्स) सुव्यवस्थित शैक्षिक प्रणाली एवं मीडिया में विस्तृत प्रबोधन द्वारा तथा वैश्विक व स्थानीय (प्रत्येक देश में) सामाजिक आंदोलनों के दबाव द्वारा भी बच्चों की प्राथमिकता एवं उनके मताधिकार की आवश्यकता की चेतना पाते हैं: "विश्व में बच्चों को प्राथमिक बनाना"। कृपया सेक्शन 10, पृ 10-8 विषय http://www.peacefromharmony.org/?cat=en_c&key=121, देखें। हमारे सुव्यवस्थित युग कैलण्डर के हाई - सोसाइटी संस्कृति की सुव्यवस्थित संस्कृति में बच्चों की प्राथमिक भूमिका-बच्चों से संबंधित अनेक प्रख्यात तिथियों द्वारा प्रतिबिंबित हुई है जो दानशीलता, सुरक्षा, प्राथमिकता, संचार, प्रतिज्ञा इत्यादि हैं। टेट्रासोशियोलॅजी की दृष्टि से यह कैलण्डर सामाजिक अस्तित्व (जीवन) की नयी गुणवत्ता व्यक्त करता है तथा यह क्षेत्रवर्गों एवं समाज में बच्चों की प्राथमिकता से उत्पन्न सुव्यवस्थित शान्ति का नया क्रम (न्यू आर्डर) है।

हमारा सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर एक सूचना संघ (हाई सोसाईटी) उपलब्ध कराने की दिशा में लोगों, धर्मों एवं सभ्यताओं को एकीकृत (जोड़ती) करती है। यह कैलण्डर ऐसे संघर्षपूर्ण आई.आर. संघों से सम्बद्ध कैलण्डरों का विकल्प है जो लोगों, धर्मों एवं सभ्यताओं को अलग करता है तथा मुकाबलों एवं संघर्षों में फँसनेवालों को अमर बनाता है। विगत दो हजार वर्षों के प्राचीन युग के कैलण्डर युद्ध एवं विजयों के स्मरणपत्रों (रिमईन्डर्स) से भरे पड़े हैं जब कि हमारा नया या सुव्यवस्थित युग "आनेवाली पीढ़ियों को एक युद्ध , आतंक, गरीबी एवं अपमान निवारण यथार्थपरक आशा की प्रतिज्ञा" करता है। युद्ध संबंधी संस्कृतियाँ एवं कैलण्डर अतीत में छोड़ दिए गये हैं। सामाजिक समन्वय की एक नयी संस्कृति, आदेश एवं कैलण्डरों ने उनका स्थान ले लिया है टेट्रासोशियोलॉजी समन्वय के एक सामाजिक आदेश के लिए मूलाधार देता है और उनको प्राप्त करने के लिए अपना ढाँचा, अपनी भूमिका, समय एवं शर्तों का वर्णन करता है। यदि, जैसा कि प्राचीन दार्शनिक

प्रोटागोरस ने 2500 वर्ष पहले माना कि मानव की माप वस्तुओं द्वारा की जाती है और वस्तुएँ मनुष्य की माप हैं दो टेट्रासोशियोलॉजी से हमें यह कहना होगा: "**यदि मानव की तुलना (मेश्ज़र) समन्वय बनती तो समन्वय मानव का** (वईस-वर्सा) **माप बनती है।** यदि यह माप (मेश्ज़र) एक हाई-सोसाईटी युग में प्रारंभ होकर साकार हो उठेगी तो वह सार्वत्रिक बहु-विमीय सूचनीय मनुष्य की माप (मेश्ज़र) बनता है। इस माप का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है, सुव्यवस्थित युग कैलण्डर, जो हमारे भाषण में प्रस्तुत की गयी परियोजना है। टेट्रोसोशियोलॉजी इसके विविध शान्तिमय तिथियों को एक सम्पूर्ण सुव्यवस्थित स्थिति में एकीकृत करते हुए इस कैलण्डर के लिए एक पर्याप्त सामाजिक दर्शन प्रदान करता है।

भविष्य में मनुष्य जाति का इतिहास दो युगों में बाँटा जाएगा: सुव्यवस्थित युग (सु.यु. - एच.इ.) एवं पूर्व सुव्यवस्थित युग (पु.सु.यु. - बी.एच.इ) अथवा उसका इतिहास रहेगा ही नहीं। जैसा कि जॉन मैक्कोन्नेल ने लिखा था "यदि मनुष्य के आचरण में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आता तो मानव इतिहास शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा" (www.earthsite.org) टेट्रासोशियोलॉजी का सामाजिक दर्शन सूत्रीकरण करने में जो खोज की थी उसके आधार पर मुझे यह विश्वास हो गया कि ऐसा प्रधान परिवर्तन सामाजिक असामंजस्य के साथ हमारे पूर्वग्रहों से केवल रूपान्तरण (ट्रैन्सफर्मेशन) द्वारा ही सूचना युग में संभव हुए सामाजिक समन्वय के प्राकृतिक आर्डर (क्रम) को पूर्णत: आलिंगन (स्वीकार) करके ही हो सकता है।

संक्षेप में :

सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर ऐतिहासिक दृष्टि से एक अभूतपूर्व बहु-संस्कृतीय तथा शान्तिदायी परियोजना है जिसे नोबल पुरस्कार के लिए मनोनीत किया गया है। "स्वर्णिम युग" की तरह जो पूरे मानव इतिहास भर में लोगों का स्वप्न रहा सुव्यवस्थित युग कैलण्डर, सुव्यवस्थित शान्ति, संस्कृति एवं सूचना समाज के लिए सुव्यवस्थित विश्व आदेश (आर्डर) की प्रथम परियोजना है। यह हमारे बच्चों और उनके बच्चों तथा समस्त परवर्ती पीढ़ियों के लिए एक नया सानुकूल कालानुक्रम (क्रोनोलॉजी) भी प्रारम्भ करेगा। जो वैचारिकी (आइडियॉलोजिकल) दृष्टि एवं 'विश्व आान्दोलन की विश्वदृष्टि बनते हुए कैलण्डर के सुपरिणाम तो इसके पहले ही मिलने लगे जिन्हें हमे अपने व्हेब सईट में मई 2005 में प्रारम्भ किया। कैलण्डर, समन्वय का समर्थन करता है जो एक सूचना सोसाईटी की नयी संस्कृति को प्रेरित करते हुए सर्वोच्च नैतिक एवं सामाजिक आदर्श बनाता है तथा उसके लिए कायम रहने योग्य एवं चिर शान्ति विकास सुनिश्चित करता है।

सह लेखकों का संबोधन :

हम विश्व के उन समस्त नागरिकों को, जो बच्चों एवं अपने पोतो के भाग्य के बारे में चिन्तित हैं - युवकों के प्रति हमारे भाषण में शामिल होकर अपने हस्ताक्षर - जोड़ने एवं उसे बढ़ावा देने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

हम -

1. सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर पर आधारित "सुव्यवस्थित शान्ति संस्कृति" नामक विशेषशैक्षिक विषय को विश्व के सभी विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ करने के लिए;

2. संयुक्त राष्ट्र संघ में (यु.एन.ओ) सुव्यवस्थित शान्ति संस्कृति का अन्तरष्ट्रिीय विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखते

हैं। यह विश्वविद्यालय, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए समुचित शिक्षाकों को तैयार करेगा तथा विश्व के प्रत्येक देश में इसी प्रकार के विश्वविद्यालयों के निर्माण हेतु प्रतिमान (नमूना) बनेगा। सुव्यवस्थित युग कैलण्डर, सब से पहले, एक ऐसी शैक्षिक परियोजना है जो बच्चों में नयी गुणवत्ता व शान्ति, शिक्षा, दक्षता उत्पन्न करेगा। कैलण्डर यह सुनिश्चित करेगा कि बच्चे समन्वय के सर्वत्रिक (यूनीवर्सल) मूल्य एवं चिरशान्ति उत्पन्न करेंगे जिसे मात्र बाल्यावस्था (बचपन) से ही सिखाया जा सकता है। चिर शान्ति ही केवल सुव्यवस्थित रहेगी और केवल उन लोगों के पास ही रहेगी जो जन्म से समन्वयपूर्वक (सुव्यवस्थित ढंग से) शिक्षित होते हैं।

- **हम** व्यवस्थित क्रम की पद्धति के लिए एक उचित व्यक्ति को चुनकर उनके द्वारा बच्चों में प्राथमिकता की शिक्षा प्रदान करना। इसकी सहायता लेने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वेब साईट – "सामाजिक समन्वय एवं बच्चों की प्राथमिकता से शान्ति की एक नवीन संस्कृति" http://www.peacefromharmony.org यह स्थल विचारों के सानुकूल बीजों का संचयन तथा समस्त विश्व से सामाजिक समन्वय का व्यावहारिक साधन का प्रतिनिधित्व करता है। इस साईट ने फरवरी – 2005 से 32 देशों से 165 सह-लेखकों को एकीकृत किया है। उसके मैत्रीपूर्ण व रचनात्मक वातावरण में सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर एवं अन्य प्रधान परियोजनाएँ प्रकट हुईं अत: यदि आपके पास बच्चों के लिए सुव्यवस्थित शान्ति के विचार एवं सुव्यवस्थित शिक्षा की परियोजनाएँ उपलब्ध हों तो आप हमारी साईट में एक पृष्ठ को बना भी सकते हैं तथा उसके कार्य में भाग ले सकते हैं।

- **हमें पूरा विश्वास है** कि दो या तीन वर्षों में हमारे आधुनिक एडीशन और अनेक लेखकों, संस्कृतियों एवं भाषाओं को "सुव्यवस्थित युगीन कैलण्डर" पर एकीकृत करेगा। सम्मिलित होने के लिए कृपया डा. लियो-सेमाश्को को जो इसके व्यवस्थापक हैं, एक ई-मेल : leo44442006@yandex.ru पर भेज दें। धन्यवाद।

हमारी प्रबल आकांक्षा वर्ष के प्रत्येक दिन को स्मारणीय या प्रेरणास्पद तथा समन्वयात्मक शान्ति बढ़ाने वाले के रूप में बनाना है ताकि युद्ध, शत्रु शेष को विनाश कर सके।

अक्टूबर 6, 2006.